





'घाप जावन में अवश्य सफल हो सकते हैं!' इस पुस्तक के लेखक, प्रसिद्ध विचारक व अनेक प्रेरणात्मक पुस्तक के रचयिता जेम्स एनन की यह दृढ़ धारणा है कि प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में, अपने अध्ययन में अवश्य सफल हो सकता है। परिस्थितियों और कठिनाइयों को दूर बना निरवरोधता का दूसरा नाम है।

परन्तु सफल होने के लिए घापका पूरा सतत से संपादन करनी होगी और सफलता के घाट साधनों का नियमित अभ्यास करना होगा। इस पुस्तक में सफलता के इन्हों घाट साधनों की व्याख्या बड़े व्यावहारिक एवं वैज्ञानिक ढंग से स्फूर्तिदायक भाषा में की गई है। कौन जाने यह पुस्तक आपका जीवन-निशा बदल दे !

हिन्द पाकेट बुक्स प्राइवेट लिमिटेड  
सरले मूल्य पर हिन्दी में उत्कृष्ट मौलिक  
और अनुवादित पुस्तकें प्रकाशित  
करने वाली सर्वप्रथम भारतीय संस्था है

# सफलता के आठ साधन

जेम्स एलन



हिन्द पॉकेट बुक्स प्राइवेट लिमिटेड  
बी. टी. रोड, साह्यद्र, दिल्ली ३२

मनुवादक  
महावीर अधिकारी



---

SAPHALTĀ KE AATH SĀDHAN I IMPROVEMENT

JAMES ALLEN

मूल्य एक रुपया

## सफलता के आठ साधन

समृद्धि की इमारत नैतिक आधारपिना पर ही खड़ी हो सकती है। बहुधा लोग यह सोचने लगते हैं कि समृद्धि का आधार धनैतिकता — यानी जालसाजी, चतुराई, धोखाधड़ी और लोभ है। बहुधा तथाकथित बुद्धिमान लोग यह घोषणा करते मुने जाते हैं, "कार्य भी भादमी द्वारा में तब तक सफल नहीं हो सकता जब तक वह बेईमान न हो।" इस प्रकार यह स्वीकार किया जाता है कि व्यापार में समृद्धि (एक अच्छी बात) बेईमानी (एक बुरी बात) का ही प्रतिफल है। ऐसे बचपुत्र्य को इनिम और विचारहीन ही कहा जा सकता है। मानवीय जीवन के पीछे जो कारणात्मक न्याय है, इस बनावट को इस न्याय का सम्पूर्ण अज्ञान और जीवन के समीप मर्यापों को प्रहम करने का ही शोचक माना जा सकता है। यह तो बड़ी बात हुई कि कोई भादमी बहुत का बहुत बोए और घाम छोड़ने की इच्छा करे या इसदम में ईंटों का मकान लड़ा करने की कल्पना करे। ये चीजें काय कारण से असंगत असम्भव हैं इसलिए इनका प्रयास करना अप्रावृत्तिक है। कार्यकारण न्याय आध्यात्मिक अथवा नैतिक दृष्टि से सिद्धात्म रूप में पुरुषक नहीं है। प्रकृति में यह रूप-मिलता ऊपर से भवे ही दृष्टियोग्य होती हो अदृश्य तत्त्वों अर्थात् विचार और ज्ञान में यह न्याय उसी तरह संश्लिष्ट है जैसे दृश्यमान भौतिक पदार्थों में। अंतर किया इतना है कि दृश्यमान पदार्थों में इस प्रक्रिया को स्पष्टि देना सकता है और उगीके अनुकूल आचरण करता है, परन्तु आध्यात्मिक पदार्थ में इस न्याय-परम्परा को न देख पाकर वह यह कल्पना कर लेता है कि यह निरपेक्ष है एतदर्थ वह उसी अनुकूलता में कार्य नहीं करता।

लेकिन हम भली भाँति यह जान सकते हैं कि यह प्राध्यात्मिक प्रक्रिया उतनी ही स्वाभाविक और स्वाभाविक है जितनी कि दृश्यमान भौतिक प्रक्रियाएँ। वास्तव में ये वही प्राकृतिक प्रक्रियाएँ हैं जो हमारे मानस-जगत् में अभिव्यक्ति पाती हैं। इसी अर्थ का शिरोधार्य करने के लिए सभी महान विद्वानों ने उपरैशात्मक कथाएँ और उन्मेष प्रस्तुत की हैं। यही तथ्य हमारे सामने रखना शिल्पियों का कर्तव्य है। मानस-लोक ही वस्तुतः दृश्यमान होकर वास्तविक संसार हो जाता है। कुछ दृश्यमान है वही अदृश्यमान का वास्तविक मुकुट है। किसी वृत्त का ऊपर वाला अर्धार्ध नीचे वाले अर्धार्ध से किसी भी प्रकार भिन्न नहीं है, उसकी केवल स्थिति भिन्न होती है। इसी प्रकार परार्थकारी और मानसिक—दस संसार के दो भिन्न वृत्त नहीं हैं वे एक सम्पूर्ण वृत्त के दो अर्धार्ध-भाग हैं। पदापवादित और प्राध्यात्मिकता परस्पर सारवत धनु नहीं हैं बल्कि वास्तविक सृष्टि क्रम में चिरन्तन रूप से उनमें देख्य है, इसीलिए जो कुछ अन्वेषण है वह कार्य और पुन के दुर्घटन में है, यहाँ बिनाश उत्पन्न होता है और सम्पूर्ण वृत्त से पूर्वक होने की श्रेष्ठ के परिणामस्वरूप बार-बार सीढ़ी खोलने के उपरान्त व्यक्ति पुनः उसी सम्पूर्ण वृत्त की ओर प्रत्यावर्तन करता है। पारिवर्तन में होने वाली प्रत्येक प्रक्रिया मानसिक जगत् में ही होती है। प्रत्येक पारिवर्तन के समान प्राध्यात्मिक विधान भी होता है।

घास किसी भी पारिवर्तन वस्तु को भी सीधे यदि घास ठीक प्रकार से छोड़ करे तो मानसिक जगत् में घासको उसकी प्राकारभूत प्रक्रिया अत्यन्त भिन्न आती। उदाहरणार्थ घास एक बीज के अंकुरण फिर पीपे के रूप में उसकी वृद्धि और अन्तिम विकास के रूप में उसके पुष्प और फिर बीज के रूप में उसके प्रत्यावर्तन को भी ले। ठीक वही है मानसिक प्रक्रिया होती है। हमारे विचार बीज हैं और मानस भूमि में बोए जाने के उपरान्त वे उगते हैं और विकास को प्राप्त होते हैं और अन्त में बुरे कार्यों के रूप में पुणित होते हैं और अपने पुन एवं प्रकृति के अनुसार पुनः विचारों में बीज रूप को प्राप्त होते हैं ताकि दूसरे मानस-लोकों में उनका अर्थ किया जा

सके। शिक्षक इन बीजों का बन्टा होता है, यथात् धार्मिक कृपक। लेकिन वह जो अपने को स्वयं सिद्ध करता है, अपनी मानस बुद्धि का बुद्धिमान कृपक कहलाता है। विचार की बुद्धि और पीछे की बुद्धि समानवर्ती हैं। समयानुकूल ही बीज-बपन होना चाहिए। ज्ञानकी पादप तथा बुद्धिस्फी पुष्प के विकसित होने के लिए समय अपेक्षित है।

इस स्वप्न पर रुकना चाहता हूँ। अपने मातापन से सगभग सौ मज के अन्दर पट, एक ढंके बूझ के शिखर पर मेरी दृष्टि जाती है, जहाँ कि उत्साही पदी ने अपना पोंससा बनाया है। शक्तिशाली उत्तरपूर्वी बामु चल रही है। इस अन्धकार के बेग से बूझ का शिखर जोरों के साथ उबर-उबर झुक रहा है। इसके बावजूद तिनकों और दासों से बने उस दुर्द बोंसस को कोई खतरा नहीं है और मादा पक्षी सुधन के मय से निर्द्वन्द्व अपने धर्मों को से रहा है। ऐसा क्यों है? ऐसा इसलिए है कि इस पक्षी ने उन सिद्धान्तों के अनुकूल अपने बोंससे की सृष्टि की है जिनसे अधिकतम शक्ति और सुरक्षा प्राप्त होती है। उसने एक ऐसी जगह को बोंससे का आधार बनाया जहाँ से वो टहनियाँ फूटती हैं, वो भिन्न शाखाओं के बीच बाने खाली स्थान को नहीं ताकि हवा का झोंका बूझ की चोटी को छिपाना ही क्यों न झुका है बोंससे की स्थिति में उससे परिवर्तन न पड़े और उसका ढांचा भी बिचलित न हो। तब कृताकार योजना से उसने बोंससे का निर्माण किया ताकि वह बाहरी दबाव के प्रति अधिक से अधिक प्रतिरोध उपस्थित कर सके और अन्दर पूरी तौर पर परिपुष्ट बना रहे। तब उसे विश्वास हुआ कि सुधन चाहे जितना भयानक हो जाए, वह पूरी निश्चिन्ता और सुरक्षा के साथ उसमें विश्राम कर सकता है। यह एक बहुत ही साधारण और सुपरिचित दृष्टान्त है। गणित के नियमानुकूल इसकी सृष्टि होने के कारण बुद्धिमान लोगों के लिए यह एक उपदेशात्मक दृष्टान्त बन जाता है और इस बात को धिया देता है कि यदि हम नियत सिद्धान्तों के अनुकूल ही काम करें तो हमें जीवन की अनिश्चित बटनाओं और भयानक सुधनों के मध्य भी सम्पूर्ण विरहात सम्पूर्ण सुरक्षा और सम्पूर्ण शान्ति की उपलब्धि हो



एकती है ।

मनुष्य द्वारा निर्मित आवास व्यवस्था मन्दिर की रचना में पत्नी के पोंछसे की अपेक्षा बहुत अधिक उचितता होती है । परन्तु फिर भी हम वहीं गणित के सिद्धान्तों के अनुकूल उनकी रचना करते हैं जोकि हमें पारिविक समय में हीका पड़ते हैं । हमसे स्पष्ट हो जाता है कि कितने प्रकार पारिविक वस्तुओं के निर्माण में भी मनुष्य सार्वभौम सिद्धान्तों का पालन करने पर बाध्य है । कोई धार्मिक भूमितिक परिणामों का उस्तपन करते हमारे लक्ष्मी करने का प्रयास नहीं करता क्योंकि यह जानता है कि एसी इमारत बनाना कतरे से खाली न होगा और यह यह भी जानता है कि मन्दिर निर्माण के क्रम में उस समय के मर्म को अपने मही पड़वाना तो अपरिहार्य रूप से सुपन्न का पहना मोंका ही इमारत को भूमिसात् कर देगा । मनुष्य अपनी भौतिक इमारत के निर्माण में बहुत वर्षों और कोन जैसे सुनिश्चित सिद्धान्तों का अन्वयपूर्ण पालन करता है और पैमाना साहस और परकार की सहायता से एक ऐसा ढांचा सजा करता है जो भीषण मूर्खता का मुकाबला कर सकता है, और तभी उसे सुरक्षित आश्रय और सुनिश्चित सुरता प्राप्त होती है ।

वास्तव में यह तो बहुत साधारण-सी बात है । हाँ यह मामूली-सी बात है क्योंकि यह सत्य है और सम्पूर्ण है और यह इतनी सरल है कि बच्चे से लड़के अपवाद को महान नहीं कर सकते और इतनी सम्पूर्ण है कि इसमें सुधार करना अशुभ की सामर्थ्य से पने है । मनुष्य ने अपनी शीघ्रतम अनुभूतियों के उपरान्त पारिविक समय के इन सिद्धान्तों को सीखा और उनके पालन करने की बुद्धिमत्ता प्राप्त की है और मैंने उनका उल्लेख इसलिए किया है कि हमारा ध्यान हम और साहस ही कि मानसिक और आध्यात्मिक व्यवस्था के सिद्धान्त प्रकृति के सिद्धान्तों के समान साधारण है और इन्हींके समान आरवत रूप से सरल और सम्पूर्ण है । मात्र के व्यक्ति उन्हें इतना बोजा मनाते हैं कि वे निर्यग्रहि उनका उस्तपन करने हैं क्योंकि वे अपनी नागवस्ती के कारण उनकी प्रकृति से घननिष्ठ हैं और उन विपत्ति के प्रति चेष्टन नहीं हैं जिसे कि वे अपने ऊपर हर समय आरोपित करते रहते

है।

पदार्थों की तरह मन में वस्तुओं की तरह बिचारों में प्राकृतिक प्रक्रियाओं की तरह कम में एक ही सुनिश्चित म्याय सम्बन्धित है और प्राण-ब्रह्मरूप या अज्ञानबल उसकी उपेक्षा की जाती है तो परिणाम के रूप में बिनाग और पराभव ही प्राप्त होती है। वास्तव में इस म्याय के अज्ञानतापूर्वक उत्सर्जन में ही मग्नता में पीड़ा और दुःख की मूर्ति होती है। पदार्थ में इस म्याय का रूप मणिप्र और मानस में यह म्याय मूर्तिबन्ता के मूल्यमात्रों द्वारा परिमणित होता है। गणितज्ञानमयता और मूर्तिबन्ता को विन्न और विरोधी सम्पूर्ण नहीं। वे ऐक्यपूर्ण समग्रता के दो बिन्दु पहलू हैं। इन्हींकी मानहमी में पदार्थ जगत् संभावित होता है और वे ही मानव-दारीय में मूर्तिमान होते हैं। धाम्ना का बाल मूर्तिबन्ता में है। इस प्रकार मूर्तिबन्ता के वास्तव मिथ्यात्व गणित के सिद्धान्तों के समान ही यथापतापुत्र है। अन्तर कबल इतना है कि वे मानसिक जगत् में काय करते हैं। मूर्तिक सिद्धान्तों के बिना जीने की सम्पना करना उसी तरह अमम्भव है, जिन प्रकार गणित के सिद्धान्तों की उपेक्षा करते हुए मफनतापूर्वक किसी भवन के निर्माण की सम्पना करना। मकार्णों की तरह अरिष भी तभी तक दुःखता के साथ बने रह सकते हैं जब तक उन्हें मतिक सिद्धान्तों की आधार धिमा पर मड़ा किया जाएगा और उनका निर्माण करने वाले अमपूर्वक एक दर्भ के उपरान्त दूसरा कम करके दिया जाता चूगा क्योंकि अरिषकी मवन का निर्माण कमकी इतों से ही किया जा सकता है। व्यापार और उसीके माय ममन्त मानवीय कारोबार इस वास्तव अथात्ता के निरपेक्ष नहीं रह सकते बल्कि वे इन सुनिश्चित सिद्धान्तों का पालन करने से ही बड़ और मूर्तित्त हो सकते हैं। यदि मूर्ति को मुद्द और स्थायी बनाना है तो मतिक सिद्धान्तोंकी आधारधिता पर स्थापित करके बड़ अरिष तथा मतिक मूर्तियों के मन्मों पर उस मड़ा करना होगा। यदि मूर्तिक सिद्धान्तों का उस्मयन करते हुए व्यापार का संभावन किया जाएगा तो उनका एक या दूसरे प्रकार के विनाग का प्राप्त होना अनरिहाय है। जिनकी भी ममुराम्य के लिये सोच को स्थानी रूप से मूर्ति को प्राप्त होने है। आनमाव या पोनेबाव

नहीं होते। अंग्रेज बाणि में बनेकर मतावसम्बिधों को सबसे अधिक सत्यनिष्ठ स्वीकार किया जाता है और हालांकि उनकी सच्चा बहुत थोड़ी है लेकिन वे सबसे अधिक समृद्धिप्राप्ति लोग हैं और इसी प्रकार भारत में वैन लोग हैं जो संख्या और गुणों में इन्हीं लोगों के समान हैं और उस देश में सबसे अधिक समृद्ध माने जाते हैं। लेकिन जब हम व्यापार-निर्माण को बात करते हैं तो हमें यह नहीं भूलना है कि वास्तव में यह इमारत इंटों सबने मकान या पत्थर से बने गिरजाघर का निर्माण करने के ही समान है, हालांकि इस भवन-निर्माण की प्रक्रिया मानसिक है। समृद्धि की सुचना किसी मकान की छत से की जा सकती है जोकि मनुष्य के चिर के ऊपर समस्त सुरक्षाओं और सुखों का संबलन करती है। छत के लिए एक सहारे की आवश्यक होती है और सहारा देने वाले स्तम्भ के लिए मजबूत नींव की। इसी प्रकार समृद्धि की छत निम्नलिखित घाट स्तम्भों पर खड़ी हुई है और उसकी नींव में नैतिक स्थिरता का सीमेंट डाला हुआ है। ये घाट स्तम्भ इस प्रकार हैं

- |                 |                  |
|-----------------|------------------|
| १ शक्ति         | २ सहानुभूति      |
| २ मित्रव्यवस्था | ३ सच्चाई         |
| ३ सत्यनिष्ठा    | ४ निष्पक्षता     |
| ४ कर्म-व्यवस्था | ५ धार्मिकविश्वास |

जो व्यापार इन सिद्धान्तों के निर्दोष व्यवहारपर आधारित होना यह इतना बुद्ध और स्थायी होना कि उसे कोई चीज न सकेगा कोई चीज उसे हानि न पहुंचा सकेगी कोई चीज उसकी समृद्धि को नष्ट न कर सकेगी कोई चीज उसकी सफलता में बाधा उपस्थित न कर सकेगी या उसे भ्रुमिसात् न कर सकेगी। उनकी सफलता जब तक इन सिद्धान्तों का पालन किया जाता रहेगा निर्दोष होगी। इसके विपरीत यदि व्यापार में इन सिद्धान्तों का पालन न किया जाएगा तो किस प्रकार की सफलता प्राप्त करना असम्भव होगा। यह भी ही सकता है कि इस व्यापार में कोई प्रयति न हो। क्योंकि ऐसी कोई चीज उसमें न होगी जो एक धर्म का दूसरे धर्म से सार्वजनिक स्थापित कर सकें वरन् उसमें जीवन का अभाव होगा और एकसूत्रता और

स्वायत्त का प्रभाव होगा। इन्हीं तत्त्वों द्वारा किसी भी बस्तु को जीवन प्राप्त होता है और उसे देह और स्वरूप प्राप्त होता है फिर वह चाहे कोई भी चीज हो। धार एक ऐस प्रादमी की तस्वीर बनाइए जिसके मन और जीवन में इन सिद्धान्तों का प्रभाव है। हालांकि इन सिद्धान्तों के बारे में आपकी जानकारी असम्पूर्ण और धुँध भले ही क्यों न हो तथापि धार ऐसे प्रादमी की कल्पना भी नहीं कर सकते जिसे इन सिद्धान्तों के बिना ही अपने काम में सफलता प्राप्त हुई हो। धार केवल उसकी तस्वीर एक ऐस प्रादमी के रूप में ही बना सकते हैं जो निरुपग्र धार्मिक व्यक्ति की तरह भटकता है। ऐसे प्रादमी को किसी व्यापारी संस्था के अध्यक्ष या किसी संगठन के मुखबार या जीवन के किसी भी विभाग में उत्तरदायी या नियंत्रकता का पद प्रदान नहीं किया जा सकता क्योंकि धार जानते हैं कि ऐसा होना असम्भव है। यह एक सच्चाई है। बाह्य नैतिकता और बुद्धि के प्रभाव की स्थिति में कोई व्यक्ति किसी काम में सफलता प्राप्त कर सकता है—यह कल्पना करने की बात ही नहीं है। उन लोगों को जिन्होंने इस सिद्धान्त की सच्चाई को पूरी तरह हृदयमय नहीं किया है पूरी तरह स्पष्ट हो जाना चाहिए कि नैतिकता समृद्धि के लिए एक साधन है, बाधा नहीं। इसके विपरीत भाव्यता रखना पूरे तौर से गलत है क्योंकि यदि सच्चाई न हो तो प्रादमी में जितना ही नैतिक सिद्धान्तों का प्रभाव हो वह उतना ही अधिक सफलता प्राप्त करता हुआ दिखाई दे।

इसलिए यह सिद्ध हो जाता है कि ये घाट सिद्धान्त कार्यकारण व्याप से कम या अधिक मात्रा में सफलता की प्राप्ति में साधन के ही रूप में कार्य करते हैं।

यह तथ्य है कि अनेकानेक बड़ी संख्या में प्रादमी इन सिद्धान्तों पर प्रयत्न करते हैं। परन्तु ऐसे भी लोग हैं जो व्यापक और पूर्णरूप से उनपर ध्यान करते हैं और ऐसे ही लोग नेता चिंतक और पत्र प्रबंधक तथा मानव-समाज के स्तम्भ बनते हैं और मानवीय विकास के प्रयत्न के लिए सिद्ध होते हैं। हालांकि बहुत कम लोग इतनी नैतिक सम्पूर्णता को प्राप्त कर पाते हैं कि वह उन्हें सफलता के चिंतन पर

नहीं होते। प्रप्रेम भाति में क्लेशकर महाबलशिवियों को सबसे अधिक कल्पनिष्ठ स्वीकार किया जाता है और हास्यार्थि उनकी संख्या बहुत बढ़ी है लेकिन वे सबसे अधिक समृद्धिवादी लोग हैं और इसी प्रकार भारत में तीन लोग हैं जो संख्या और धर्मों में इन्हीं लोगों के समान हैं और उस देश में सबसे अधिक समृद्ध मान जाते हैं। लेकिन जब इस व्यापार-निर्माण की बात कही है तो हमें यह नहीं भूलना है कि वास्तव में यह इमारत इतनी सबसे महान या पत्थर से बने पिरामिड का निर्माण करने के ही समान है हालांकि इस भवन-निर्माण की प्रक्रिया मानसिक है। समृद्धि की तुलना किसी महान की छत से की जा सकती है जोकि मनुष्य के तिर के ऊपर समस्त गुरुणाओं और गुप्तों का संकलन करती है। छत के लिए एक सहारे की जरूरत होती है और सहारा देने वाले स्तम्भ के लिए मजबूत नींव की। इसी प्रकार समृद्धि की छत निम्नलिखित पाठ स्तम्भों पर खड़ी हुई है और उसकी नींव में नैतिक स्थिरता का सीमेंट लगा हुआ है। ये पाठ स्तम्भ इस प्रकार हैं

- |                 |               |
|-----------------|---------------|
| १ शक्ति         | २ सहानुभूति   |
| ३ मित्रभावित्वा | ४ सचाई        |
| ५ सत्यनिष्ठा    | ६ निष्पक्षता  |
| ७ क्षम-व्यवस्था | ८ धारणविश्वास |

जो व्यापार इन सिद्धांतों के निर्धारण व्यवहारपर आधारित होना वह सतना दूर और स्थायी होगा कि उस कोई चीज न सकया कोई चीज उसे हानि न पहुंचा सकेगी, कोई चीज उसकी समृद्धि को नष्ट न कर सकेगी कोई चीज उसकी सफलता में बाधा उपस्थित न कर सकेगी या उसे भूमिच्छा न कर सकेगी। उसकी सफलता जब तक इन सिद्धांतों का पालन किया जाता रहेगा निरंतर होगी। इसके विपरीत यदि व्यापार में इन सिद्धांतों का पालन न किया जाएगा तो किस प्रकार की सफलता प्राप्त करना असम्भव होगा। यह भी हो सकता है कि इस व्यापार में कोई प्रगति न हो। क्योंकि ऐसी कोई चीज रहने न होगी जो एक धर्म का दूसरे धर्म से सामंजस्य स्थापित कर सके वरन् उसमें वीचल का भभाव होगा और एकनृजता और

स्वायत्त का प्रभाव होगा। इन्हीं तत्त्वों द्वारा किसी भी बस्तु को जीवन प्राप्त होता है और उसे देह और स्वरूप प्राप्त होता है फिर वह चाहे कोई भी चीज हो। घास एक ऐसे प्राणियों की तस्वीर बनाएँ जिसके मन और जीवन में इन सिद्धान्तों का प्रभाव है। हालाँकि इन सिद्धान्तों के बारे में घासकी जानकारी असम्पूर्ण और दृढ़ भले ही क्यों न हो तथापि घास ऐसे प्राणियों की कल्पना भी नहीं कर सकते जिसे इन सिद्धान्तों के बिना ही अपने काम में सफलता प्राप्त हुई हो। घास केवल उसकी तस्वीर एक ऐसे प्राणियों के रूप में हो बना सकते हैं जो निर्याय व्यक्तिगत व्यक्ति की तरह मरता है। ऐसे प्राणियों को किसी व्यापारी मर्यादा के प्रत्यक्ष या किसी संगठन के मूलधारवा जीवन के किसी भी विभाग में उत्तरदायी या नियन्त्रकता का पद प्रदान नहीं किया जा सकता क्योंकि घास जानते हैं कि ऐसा होना असम्भव है। यह एक सच्ची है। बाँधित नैतिकता और बुद्धि के प्रभाव की स्थिति में कोई व्यक्ति किसी काम में सफलता प्राप्त कर सकता है—यह कल्पना करने की बात ही नहीं है। उन लोगों को जिन्होंने इस सिद्धान्त की सच्ची का पूरी तरह हृदयंगम नहीं किया है पूरी तरह स्पष्ट हो जाना चाहिए कि नैतिकता समृद्धि के लिए एक साधन है बाधा नहीं। इसके विपरीत मान्यता रखना पूरे तौर से गलत है क्योंकि यदि सच्ची न हो तो प्राणियों में विज्ञान ही नैतिक सिद्धान्तों का प्रभाव हो वह उतना ही अधिक सफलता प्राप्त करता हुआ दिखाई दे।

इसलिए यह सिद्ध हो जाता है कि ये पाठ सिद्धान्त कायकारण न्याय से कम या अधिक मात्रा में सफलता की प्राप्ति में साधन के ही रूप में कार्य करते हैं।

यह सत्य है कि प्रयोगात्त बोद्धी मर्यादा में प्राणियों इन सिद्धान्तों पर प्रभाव करते हैं। परन्तु ऐसे भी लोग हैं जो व्यापक और पूर्णरूप से उनपर प्रभाव करते हैं और ऐसे ही लोग नेता शिक्षक और पत्र प्रवर्धक तथा मानव-समाज के स्तम्भ बनते हैं और मानवीय विकास के प्रबल प्रेरक सिद्ध होते हैं। हालाँकि बहुत कम लोग इतनी नैतिक सम्पूर्णता को प्राप्त कर पाते हैं कि वह उन्हें सफलता के सार पर

नहीं होते। संघेज जाति में स्केकर मठावसथियों को सबसे अधिक उत्पत्तिष्ठ स्वीकार किया जाता है और हास्यकि उनको सख्या बहुत बोड़ी हैलेकिन वे सबसे अधिक समुद्रिषाली लोग हैं और इसी प्रकार भारत में वैन लोग हैं जोसख्या और पुत्रों में इसी लोगों क समान हैं और उस देश में सबसे अधिक समुद्र माने जाते हैं। लेकिन जब हम व्यापार-निर्माण की बात करते हैं तो हमें यह नहीं भुलना है कि वास्तव में यह इमारत इंटों सेबने मकान या फत्पर से बने गिरजाघर का निर्माण करने के ही समान है, हास्यकि इस मकान-निर्माण की प्रक्रिया मानसिक है। समुद्रि की तुलना किसी मकान की छत से की जा सकती है जोकि मनुष्य के सिर के ऊपर समस्त सुरक्षाओं और सुकों का संवहन करती है। छत के लिए एक सहारे को बकरछ होती है और सहाय्य देने वाले स्तम्भ के लिए मजबूत नींव की। इसी प्रकार समुद्रि की छत निम्नलिखित घाट स्तम्भों पर बड़ी हुई है और उसकी नींव में नैतिक स्थिरता का सीमेंट बना हुआ है। ये घाट स्तम्भ इस प्रकार हैं

- |                |                |
|----------------|----------------|
| १ सक्रि        | २ सहानुसुति    |
| २ मिश्रम्यपिता | ३ सचाई         |
| ३ उत्पत्तिष्ठा | ७ निष्पदाता    |
| ४ काम-म्यवस्था | ८ मास्मकिरिषास |

जो व्यापार-इतिहासों के निर्दोष व्यवहारपर आधारित होगा वह इतना बूढ़ और स्वाधी होगा कि उस कोई चीज न सकेगा कोई चीज उसे हासि न पहुँचा सकेगी कोई चीज उसकी समुद्रि को नजर संबाय न कर सकेगी कोई चीज उसकी सफसता में बाधा उपस्थित न कर सकेगी या उसे भूमिसात् न कर सकेगी। उनकी सफसता जब तक इन सिद्धासों का पालन किया जाता रहेगा निर्दोष होगी। इसके विपरीत यदि व्यापार में इन सिद्धासों का पालन न किया जाएगा तो किस प्रकार की सफसता प्राप्त करना संभव होगा। यह भी हो सकता है कि इस व्यापार में कोई प्रयति न हो। क्योंकि ऐसी कोई चीज उसमें न होगी जो एक संघ का दूसरे संघ से सामंजस्य स्थापित कर सके वरन् उसमें वीचन का समाव होगा और एकमूवता और

स्वायत्त्व का प्रभाव होता। इन्हीं तत्त्वों द्वारा किसी भी वस्तु को जीवन प्राप्त होता है और उस बेह और स्वरूप प्राप्त होता है, फिर वह चाहे कोई भी चीज हो। घाप एक ऐसे घावमी की तस्वीर बनाइए जिसके मन और जीवन में इन सिद्धान्तों का प्रभाव है। हालांकि इन सिद्धान्तों के बारे में घापकी जानकारी असम्पूर्ण और खूब मसे ही क्यों न हो तथापि घाप ऐसे घावमी की कल्पना भी नहीं कर सकते जिसे इन सिद्धान्तों के बिना ही अपने काम में सफलता प्राप्त हुई हो। घाप केवल उसकी तस्वीर एक ऐसे घावमी के रूप में ही बना सकते हैं जो निरपाम अकिञ्चन व्यक्ति की तरह भटकता है। ऐसे घावमी को किसी व्यापारी मस्वा के अध्यक्ष या किसी संघटन के मुखबारया जीवन के किसी भी विभाग में उत्तरदायी या नियन्त्रणकर्ता का पद प्रदान नहीं किया जा सकता क्योंकि घाप जानते हैं कि ऐसा होना असम्भव है। यह एक सच्चाई है। बाह्य नैतिकता और बुद्धि के प्रभाव की स्थिति में कोई व्यक्ति किसी काम में सफलता प्राप्त कर सकता है—यह कल्पना करने की बात ही नहीं है। उन लोगों को जिन्होंने इस सिद्धान्त की सच्चाई को पूरी तरह हृदयमन नहीं किया है पूरी तरह स्पष्ट हो जाना चाहिए कि नैतिकता समृद्धि के लिए एक साधन है, बाधा नहीं। इसके विपरीत मान्यता रखना पूरे तौर से गमल है क्योंकि यदि सच्चाई न हो तो घावमी में जितना ही नैतिक सिद्धान्तों का प्रभाव हो वह उतना ही अधिक सफलता प्राप्त करता हुआ दिखाई दे।

इसलिए यह सिद्ध हो जाता है कि ये घाठ सिद्धान्त कार्यकारण म्याय से कम या अधिक मात्रा में सफलता की प्राप्ति में साधन के ही रूप में काम करते हैं।

यह सत्य है कि अपेक्षाकृत बड़ी संख्या में घावमी इन सिद्धान्तों पर ध्यान करते हैं। परन्तु ऐसे भी लोग हैं जो व्यापक और पृथक् से उनपर ध्यान करते हैं और ऐसे ही लोग नेता सिद्ध और एक प्रदर्शक तथा मानव-समाज के स्तम्भ बनते हैं और मानवीय विकास के प्रथम प्रेरक सिद्ध होते हैं। हालांकि बहुत कम लोग इतनी नैतिक सम्पूर्णता को प्राप्त कर पाते हैं कि वह उन्हें सफलता के सिधर पर



पहुँचा वे लेकिन जो थोड़ी-बहुत सफलता लोगों को प्राप्त होती है वह भी इन्हीं सिद्धान्तों का पालन करने से होती है। ये सिद्धान्त परिणाम की दृष्टि से इतने परिष्कारशील होते हैं कि यदि इनमें से जो या तीन में भी सम्पूर्णता को प्राप्त कर लिया जाए तो सामान्य रूप से समृद्धि प्राप्त करने के लिए यही पर्याप्त है। ऐसे लोग कुछ समय तक स्वार्थीय प्रभाव देना कर सकते हैं और यदि कोई भारतीय जो या तीन के पालन में सम्पूर्णता प्राप्त कर के और क्षेत्र में धार्मिक कुशलता प्राप्त कर ले तो अपने व्यापार और प्रशासकीय क्षेत्र की इस सीमित सफलता को स्थायी बना सकता है और जैसे-जैसे इन सिद्धान्तों का पालन परिमाण में बढ़ता जाएगा और उनका ज्ञान और व्यवहार बढ़ता जाएगा वह सफलता पूर्णरूप से स्थायी होती जाएगी।

धर्मिक नीतिक सीमाएँ ही उसकी सफलता की सीमाएँ बनती हैं। यह इतनी बड़ी हुईकत है कि धर्मिक का नैतिक स्तर जान लेने पर इनके आधार पर उसकी धर्मिक सफलता प्रथम प्रथमता की धर्मिक के परिणाम के समानसाक-साफ़ बताया जा सकता है। समृद्धि का मंदिर नैतिक स्वप्न के सहारे पर ही खड़ा रह सकता है। ज्यों-ज्यों वह स्वप्न कमजोर पड़ता-जाता है मंदिर की स्थिति घमुरसित होती जाती है और अंत में समय इन स्वप्नों का सहारा पूरी तरह हटा लिया जाता है तो वह मंदिर हूँकारकर पिर पड़ता है और ध्वस्त हो जाता है। धर्मिक विफलता और पराजय इन्हीं नैतिक सिद्धान्तों की उपेक्षा या उस्तर्जन करने से प्राप्त होती है। कार्यकारण न्याय से ऐसा होना अपरिहार्य है। जिस प्रकार आकाश में जैका हुआ पत्थर पृथ्वी पर नीटकर माता है उसी प्रकार प्रत्येक कर्म—धर्म्य और धर्म्य—अपने कर्ता पर ही नीटकर माता है। प्रत्येक धर्मिक कार्य से नश्य की उपलब्धि में बाधा पड़ती है और इस प्रकार प्रत्येक किए जान वाले धर्मिक कार्य के अनुपात से नश्य की उपलब्धि दूर से दूर तर होती जाती है। इसके विपरीत प्रत्येक नैतिक कार्य समृद्धिकपी धर्मिक की मजबूत ईंटों का कार्य करता है और सहारा देने वाले स्वप्न को हड़ता और कलात्मक धीरे-धीरे प्रदान करता है।

धर्मिक परिवारों और राष्ट्रों का विकास और समृद्धि उनकी

नैतिक शक्ति और ज्ञान के अन्वय से ही होती है और नैतिक पतन के कारण ही उनका पराभव होता है और उन्हें असफलताएं प्राप्त होती हैं। मानसिक शक्ति या शारीरिक चाहे किसी तरह का हो तभी तक स्थायी रूप से बड़ी रह सकती है जब तक कि उसके रूपनिर्माण में पुष्टता हो। अनैतिकता शून्य के समान है। उससे किसी भी वस्तु का निर्माण नहीं किया जा सकता। यह पशु का रिक्त रूप है। अनैतिकता ही विनाश है। इस प्रक्रिया से ही मनुष्य का मन्मीकरण होता है। इन सिद्धान्तों की उपेक्षा से व्यक्ति की शक्तियों का विघटन और पतन होता है। इस प्रकार बिलसी हुई शक्तियों को बुद्धिमत्ता पूर्वक पुनः बिना शर्त की सहायता से संगठित किया जा सकता है उस बुद्धिमान निर्माता की सहायता से—नैतिकता। नैतिकता ही शून्य और निर्मातृ-शक्ति का संयुक्त रूप है। नैतिकता निर्माण करती है और संगठित रखती है। यह प्रकृति उस अनैतिकता की विरोधी है जो विपत्ति बनती और विध्वंसकारी है। नैतिकता महान निर्माण का कार्य करती है चाहे वह व्यक्तियों के निर्माण का कार्य हो या राष्ट्रों के।

नैतिकता अशून्य है और जो व्यक्ति उसके आधार पर बड़ा होता है वह जैसे एक अखंडनीय बट्टान पर बड़ा होता है इसलिए उसकी पराजय असंभव है। उसकी विजय निश्चित है। ऐसे व्यक्तियों को परीक्षाओं में से गुजरना हाता है और वे परीक्षाएं बड़ी से बड़ी परीक्षाएं हो सकती हैं क्योंकि बिना सबब के विजय प्राप्त नहीं होती। सबब से नैतिक शक्तियों में परिपूर्णता पाती है। स्थायी सिद्धान्तों का यही स्वाभाविक रूप है। कोई भी वस्तु अपने शौर्य और सम्पूर्णता को सब तक प्राप्त नहीं करती है जब तक उसकी शक्ति परीक्षा द्वारा प्रतिष्ठित न हो जाए। वे घसकाएँ जो कि दुनिया में सबसे अधिक शक्तिवासी और अष्ट काय में उपयोग की जाती हैं सब ही नुहार द्वारा अधिक से अधिक तनाई जाती हैं ताकि उनकी शक्ति और उनकी शक्ति की परीक्षा हो जाए और वे दुकान पर बची जात सिए नबो या सभे। इट पकान बाव उन ईटों को उगार एक तरह फेंक देते हैं जो सक्त मर्मा के मुकाबले में टकर नहीं जातीं। इसलिए यदि किसी धारणी को महान होना है और स्थायी सफलता प्राप्त करनी है तो

उसे विरोधी परिस्थितियों से बचना होगा। परीक्षा-प्रश्न में तपकर  
 उसका नैतिक बल दुर्बल न होकर घोर भी पवित्रतामी एवं सुन्दर  
 रूप में उसे प्राप्त होता है। ऐसे मनुष्य इत्यादि की तपी हुई चलाका  
 के समान हो जाते हैं जिसकी ऊँचे से ऊँचे काम में सहाया वा सकता  
 है और तब बुनियाद रखती है कि संसार का कोई अपभोगी कार्य ऐसा  
 नहीं जिसके लिए उसपर विश्वास न किया जा सके। मनैतिकता पर  
 किसी भी कोने से आक्रमण किया जा सकता है और वे व्यक्ति जो  
 मनैतिकता के आधार पर खड़े होने की चेष्टा करते हैं, सुखता की बल  
 बल में फँस जाते हैं। हाताकि वह व्यक्ति अगर से देखने में कड़ा हुआ  
 दिखाई पड़ता है परन्तु मनै- मनै वह सबसाम को प्राप्त होता है। यह  
 सुखता के रूप में उसकी चरम परिणति अपरिहार्य है। हाताकि मनै  
 तिक व्यक्ति बुरे उपायों से अभिन्न अपनी उपलब्धियों पर डींग मारता  
 है लेकिन उसके मनमाने ही उसकी जेब में मुराह हो जाता है। उसका  
 स्वर्न बिरता जाता है। वे व्यक्ति, जो नैतिकता को अपनाते हैं परन्तु  
 परीक्षा की बर्धियों में लोचबल उसे छोड़ देते हैं उन ईंटों के समान  
 हैं जो तपाए जाने पर खण्डित हो जाती हैं। ऐसा व्यक्ति किसी काम  
 का नहीं। बुनियाद उसे टुकटा देती है तथापि भारती ईंट की तरह  
 बड़ नहीं होता। वह एक जीवित प्राणी है और अपने जेद जीवन में  
 अपनी जूतों का प्रामथिष्ठ करके और उनसे छील बहण करके वह  
 पुनः अपनी परिमा को प्राप्त कर सकता है। नैतिक शक्ति में ही सब  
 प्रकार की सफलताओं का निवास है और सभी प्रकार की सम्भियों  
 में यही बिरस्वायी तत्त्व है। लेकिन सफलताओं की अनेक कौटिबी  
 होती है और कभी-कभी यह आवश्यक हो जाता है कि एक दिशा में  
 व्यक्ति को अतफलता प्राप्त हो ताकि वह अपने को महानता और अथिक  
 बिरस्वायी सफलता की प्राप्ति में संलग्न कर सके। उदाहरण के  
 लिए एक साहित्यिक कलाकार या आध्यात्मिक व्यक्ति इन्वोवार्सन के  
 चरैस्य से कार्य आरम्भ करवा है। यह आवश्यक है और ऐसा बहुधा  
 होता है कि उसे अपने अजीवित बहस्य में अतफलता प्राप्त हो।  
 परन्तु उन्हे अतकी प्रतिमा में निवार जाता है और वह सफलता के  
 उद्य गतिवाचक रूप को प्राप्त करता है बही उसकी प्रतिमा की वास्त

किन्तु शक्ति अविहित होती है। अनेक करोड़पति वेक्सपियर की साहि  
 दिनक सफलता या आध्यात्मिक सफलता की प्राप्ति के लिए अपनी  
 भावों की सम्पत्ति का सोदा कर सकते हैं और ऐसा करके भी वे यह  
 सोच सकते हैं कि उन्होंने घाटे का शौदा नहीं किया। असाधारण  
 आध्यात्मिक सफलता के साथ समृद्धि बहुधा प्राप्त नहीं होती तथापि  
 आर्थिक सफलता को आध्यात्मिक सफलता की महत्ता और गरिमा  
 की तुलना में तुच्छ ही माना जाएगा। परन्तु इस पुस्तक में मैं सर्वा  
 अथवा आध्यात्मिक प्रतिभाओं की सफलता की अर्थात् कर्ममा  
 करण् अथ सफलता की अर्थात् कर्ममा जिसका सम्बन्ध सर्वसाधारणके  
 कल्याण और सुख से है। यह सफलता और समृद्धि क्रमोन्नेय सम्पत्ति  
 से संबंधित हो सकती है और इस कारण केवल धार्मिक तथा स्थायी  
 दोनों प्रकार की हो सकती है। परन्तु इतना निश्चित रूप से कहा जा  
 सकता है कि समस्त मानव क्रियाओं पर उत्तका प्रभाव पड़ता है।  
 यह साम्प्रतिक सफलता शक्ति और सम्पत्ति में मानवस्य स्थापित  
 करके उसे वह तत्त्व प्रदान कर सकती है जिसे हम सुख की संज्ञा से  
 पुकारते हैं, और वे मानव प्रदान कर सकती है जिन्हें हम समृद्धि की  
 संज्ञा से अविहित करते हैं। हमें यह सब देखना है कि ये घाट  
 मिश्रण इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए, जो मानव-समुदाय के लिए  
 इतना धार्मिक प्रेम है जिस प्रकार वायु करते हैं और उनके आचार  
 पर किन्तु प्रकार समृद्धि की छत्र रोपी जा सकती है और उसको  
 सहारा देने वाले शत्रुओं पर मुराघित रखी जा सकती है।

न बुगुनों का। वह पूरी तरह बंदर बूम्य घोर निष्कल होती है। वह व्यक्ति—जो अपनी शक्ति को बुरे कर्म में समाता है—कम से कम अपने एक गुण को तो प्रशुभ्य रखता है और वह गुण है कर्मठता का। बड़ी शक्ति जिसका उपयोग वह स्वार्थपूरक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए करता है उनके सिरपरसंघट्टों पीकामोंघोर दुष्टों का पनाटोपछादेनी घोर अपने अनुमनों के सहारे वह अपने कर्म को बदलने पर बाधित हो जाएगा। उचितसमयपरबदलसकेमन की प्राप्ति सदुद्देश्यों कोरेकनेमें सफल ही सकेगी तो वह अपने जीवन पर सिद्दाबसोकन करेगा और अपनी शक्ति के प्रयोग के लिए नवीन घोर उचित पाठसों का अनुसंधान करने में सफलता प्राप्त करेगा। तब वह व्यक्ति गुन की साधना में भी उतना ही उत्कृष्ट बुध्दयं शिठ होमा जितना धधुम की प्राप्ति में। इस पुरानी कहावत में यह सरय कितने सुन्दर रूप में व्यक्त हुआ है—जितना बड़ा पानी उतना बड़ा मन्त।

शक्ति ही सामर्थ्य है। इसके बिना दुनिया में किसी भी सफलता की प्राप्ति संभव नहीं। इसके बिना सदुद्देश्यों की प्राप्ति भी असंभव है। धधुम से बुर रहना ही सदुद्देश्य नहीं है। सदुद्देश्य का बास सत्कर्म में ही है। कुछ ऐसे भी लोग होते हैं जो सत्कर्म करने की चेष्टा करते हैं किन्तु शक्ति के अभाव के कारण असफल रह जाते हैं। उनके अफल होने के कारण होते हैं कि उनका कोई सुस्पष्ट परिचय नहीं निकलता। ऐसे लोग कुटिल नहीं होते और जाल-बूमकर किसीको हानि नहीं पहुंचाते। इसलिए उन्हें बहुधा अज्ञान धावधी माना जाता है। पर वे जीवन में असफलता का ही भरम करने हैं। क्योंकि हानि पहुंचाने की असमर्थता को अज्ञान नहीं कहा जा सकता। यह दो बुध्दयं घोर निःशक्त होने का लक्षण है। बड़ी व्यक्ति वास्तव में सक्तिमासी होगा है जो हानि पहुंचाने की सामर्थ्य रखते हुएभी अपनी शक्तियों को सत्कर्म में ही लगाता है। इसलिए जब तक व्यक्ति पर्याप्त मात्रा में शक्ति का स्वामी नहीं होगा तब तक उसे नैतिक बल प्राप्त नहीं हो सकता। उसी प्रकार जैसे बिना निवासक शक्ति के किसी भी रत्न में रत्न नहीं धारी उतनी अज्ञान अशक्त घोर सुपुत्र ही जैसी उसका प्रकाशन नहीं होगा।

जीवन के प्रत्येक विभाप में शक्ति ही कर्म की मूलशक्ति है; कर्म चाहे प्राणिक हो अथवा प्राण्यारमिक। इसलिए कर्म का धारण—चाहे वह किसी सैनिक के द्वारा किया गया हो किसी शिक्षक के माध्यम द्वारा अथवा सेवकनी से निकला हो—इसे अपनी सौई शक्तियों को जगाने की प्रेरणा देना ही जीव ह्राप में प्राणिक को जीवित के साथ करने की चेतावनी देना है। सभी शक्ति और विचारक अपने शक्तियों को सदैव ही मनन-चिन्तन में वेष्टापूर्वक रत रहने की प्रेरणा देते रहते हैं। जीवन के सभी क्षेत्रों में शक्ति समान रूप से दृष्ट है। केवल सैनिक इंजीनियर या व्यापारी के लिए ही कर्म करने का विधान नहीं है। उद्योगों, शान्तियों और सुन्दों के उपदेशों में सभी के लिए कर्म करने की प्रेरणा होती है।

एक महान बुद्ध ने अपने शिष्य को सब 'अप्यक्त रहने' की शिक्षा दी। इस शिक्षा में यही प्रेरणा निहित है कि यदि मनुष्य अपने सक्षम को सिद्ध करना चाहता है तो उनके लिए शक्ति का निरन्तर उपयोग करना आवश्यक है। यह एक सप्ताह नीतिशक्ति और सन्त दोनों के ही लिए समान रूप से उपयोग हो सकती है। 'स्वाधीनता का मूल्य है नैतिक कर्मसत्त्वता और स्वाधीनता की प्राप्ति ही मनुष्य का अन्तिम अर्थ है। सभी शिक्षक का कथन है—“यदि मनुष्य को कर्म करना है तो उसे स्वयं करना चाहिए और उत्कृष्टता के साथ सम्पन्न करना चाहिए।” इस उपदेश का अर्थ यही है कि कर्म ही शक्ति है और उपयुक्त उपयोग के द्वारा अपने बुद्धि और विकास किया जा सकता है। शक्ति ही शक्ति हमें प्राप्त है अपने बुद्धि के लिए भी इसका उपयोग आवश्यक है। जिसके पास है उसीको और शक्ति है। जो पराश्रमी है शक्ति और स्वाधीनता उसीको प्राप्त होती है।

किन्तु यदि शक्ति को सुव्यवस्थित होना है तो केवल सुदुर्देश की पूर्ति में उसे सफल ही नहीं है। साधकानी के साथ उसे नियंत्रित और मुर्छित रखा जाना भी अनिवार्य है। प्राणिक युग में शक्ति को मुर्छित रखने में जो प्रयत्नता दी जाती है, उससे शक्ति के उस नियम की दृष्टि होती है कि शक्ति का कर्म ह्राप अथवा हानि नहीं

लोग उसके पीछे दौड़ते हैं किन्तु वह स्वयं जो दिग्-राज बौद्ध-भूप करता है, परेशानी उठाता है और अपने काम को धीमेता के साथ खिंच करमा चाहता है, (इस बातों को भ्रमवश वह चचेष्ट होना मानता है) कभी कामवासी का मुँह नहीं देख पाता बल्कि सोम उसकी शक्ति से बेकार बिसाई देते हैं। परन्तु उसे मासूम नहीं होता कि उसका पड़ोसी धारम-समय नहीं है वह समझवापी के साथ काम करता है अधिक काम करता है उसे अधिक कुशलता के साथ करता है और उसमें अधिक आत्मानुशासन और पीरप्यता है। उसकी सफलता और उसके प्रभाव का यही रहस्य है। उसकी शक्तियाँ नियंत्रित हैं और उपयोग में आती हैं जबकि दूसरे व्यक्ति की शक्तियाँ बिना मिल रही हैं और उनका दुष्प्रयोग होता है।

इसीलिए शक्ति समृद्धि के मन्दिर का प्रथम स्तम्भ है। इस प्रथम और आवश्यक उत्पादन के बिना समृद्धि प्राप्त होना सम्भव नहीं। शक्ति के बिना समता प्राप्त नहीं होती और न ही पीरप्यता आत्म-सम्मान और स्वाधीनता प्राप्त होती है। बेकार लोगों में अधिकतर लोग इसीलिए बेकार होते हैं क्योंकि उनमें शक्ति नहीं होती। वह आदमी जो बंटों तक पैर में हाथ डाले हुए कुष्ट पीठा हुआ इस बात की प्रतीक्षा में खड़ा रहता है कि कोई माएगा और उसे एक बीयर का बिनास पीने के लिए नियंत्रित करेगा मुश्किल से ही अपने लिए काम को करने में सफल हो सकता है। अगर उसे काम मिलना तो वह चाकर ही उसे स्वीकार करेगा। शारीरिक रूप से युक्त और मानसिक रूप निष्क्रिय ऐसा आदमी उत्तरोत्तर इन दुर्गुणों में वृद्धि करता जाता है। वह उत्तरोत्तर अपने को काम के प्रयोग्य एतरर्थ जीने के प्रयोग्य बनाता जाता है। शक्तिवासी आदमी अस्थायी समय के लिए बकायी और परेशानी में से गुजर सकता है लेकिन हमेशा के लिए उसका बेकार रहना सम्भव है। उसे या तो काम मिल जाएगा या उसे वह पैसा कर लेना क्योंकि निष्क्रियता उसे पीड़ा पहुँचाती है काम उसे प्रकृतिमान करता है, और ऐसा आदमी बिना काम करने में मुस का अनुभव होता है, अधिक समय तक बेकार नहीं रह सकता।

प्रकल्प्य प्राणमी किसी काम में मराना ही नहीं चाहता। बिना काम किए ही उसकी प्रतिमा मुबार होती है। उसकी सबसे बड़ी शोक यहो रहती है कि काम से किस प्रकार दर्दन झुकाई जाए। विवास्वन् ही उसकी खुशी है। यदि ऐसा प्राणमी किसी समाजवादी को भी मिल जाए—जो सब तरह की बेकारी भेज बनाइय लोगों को बत है तो वह भी ऐसे बाहिस प्राणमी को बरसास्त किए बर्बर न रहेगा। काम धोर धोर निम्न प्राणमी को कौन काम पर रहेमा। ऐस ही बेकारों की सेना सड़ी होती जाती है। प्रकल्प्यता इसमी निम्न कोटि की बुलाई है जिसस सभी कमजोर धोर सही विचारों वाले लोग बुना करते हैं।

परन्तु सक्ति तो एक समयटि बत है। वह एकाधी नहीं रहती। इसमें वे गुण भी सम्मिलित रहते हैं जो बरिब को बसवान बनाते हैं धोर समृद्धि की सृष्टि करते हैं। मुख्य रूप से ये विधपचार निम्न मिश्रित उपादानों में प्राप्त होती है

१ तत्परता

१ उद्यम

२ सतर्कता

४ ध्ययनिष्ठा

शक्ति के स्तम्भ में ये चार चीजें कड़ीट की तरह लगी हुई हैं। इन तत्त्वों म हड़ता एवं स्थायित्व धोर उबर्नस्त से उबर्नस्त सापाठ को सहन करन की शक्ति है। इन्हीके समायोग स जीवन सामर्थ्य समता धोर प्रगति का निर्माण जाता है।

तत्परता हमारी सबसे मुख्यवान शक्तिय है। इसके द्वारा बित्वस भीयता प्राप्त होती है। वे लोग जो सर्वेव आपरुक्त रहते हैं तत्काल कर्मरत हो जाते हैं धोर जो समय के पाबन्द हैं वे सर्वत्र बिबाम के पात्र समरत जात हैं। वे मामिक जो स्वय कार्यठतर होने हैं अपने कर्मचारियों के लिए प्ररमा का स्रोत बनते हैं धोर काम की अपेसा करने वालों के लिए धंधुष का काम करते हैं। वे पूरे-पूरे अनुशासन का भी साधन बनत हैं। इस प्रकार अपनी उपयोगिता धोर मरुमता में धर्मबुद्धि करने के साध-साध के इमरों की उन्त्यागिता धोर सफलता व भी साधन बनते हैं। एक प्राणमी कायकर्ता हमेसा ही अपने काम को मरिष्य के लिए स्पणित करता जाता है वह समय से



पीछे विद्युत्ता जाता है और इस प्रकार अपने लिए ही नहीं दूसरों के लिए भी विद्युत् का कारण बनता है। उसकी सेवाओं का कोई आर्थिक मूल्य नहीं समझा जाता। कार्य के प्रति उत्साह और उसे शीघ्रता से सम्पन्न करना कार्य-उत्पत्ता के दो प्रमुख उपादान हैं जो समृद्धि की प्राप्ति में उपयोगी बनते हैं। सामान्य काम-साधने में भी जागरूकता रखने से क्षमताओं का सदुपयोग होता है और कार्य-उत्पत्ता से सिद्धि मिलती है। कार्य को फल के लिए स्वधित करने वाला आदर्श व्यापार में कभी सफल सिद्ध नहीं होता। मुझे इस प्रकार सफलता प्राप्त करने वाला आदर्श आज तक नहीं मिला जबकि असफल होने वालों में बहुतों को मैं जानता हूँ।

सतकता हमारी समस्त क्षमताओं और मानसिक शक्तियों के प्रहरी का काम करती है यह एक ऐसा पुस्तक है, जोकि हिंस्रत्मक और विष्वसतमक तत्त्वों के प्रवेश को वर्जित करता है। यह सफलता-स्वाधीनता और बुद्धिमत्ता की संरक्षक और निष्कट सहयोगी है। जिसका मानस सतक नहीं वह आदर्श मूर्ख है और मुक्तों को कभी समृद्धि नहीं प्राप्त होती। भावनाओं के भावेण में बहकर मूर्ख व्यक्ति अपने मन पर अधिकार को खो बैठता है और इस प्रकार अपनी सम्भीरता खरिमा और निर्धनबुद्धि को चटिया विचारों द्वारा मूढ कर बैठता है। वह कभी अपने हित के प्रति सतक नहीं रह पाता और उसके मन के द्वारा सभी अनिष्ट कार्यों एवं आक्रान्ताओं के लिए खुले होते हैं। वह इतना दुर्बल और अस्थिर होता है कि किसी भी भावान्तात्मक शक्ति से प्रभावित हो जाता है। वह जहाँ जहाँ का उदाहरण होता है कि 'सोपों को कैसा होना चाहिए। वह हमेशा ही असफल होता है। एक मूर्ख व्यक्ति सम्मता का सघटीर व्यापार है और समाज में उसे कहीं भी आदर प्राप्त नहीं होता। जिस प्रकार शक्ति की अरम परिणति बुद्धिमत्ता में होती है उसी प्रकार मूर्खता की अरम परिणति दुर्बलता में होती है।

विचारशीलता और जीवन के समस्त कार्यव्यापार में शीलापन प्रसन्न रहने के ही स्पष्ट दुष्परिणाम होते हैं। विचारशीलता ही ता का धुरता नाम है।

विचारहीनता के परिणामस्वरूप असफलताएं और विपत्तियां ही हमें प्राप्त होती हैं। उपयोगिता और समृद्धि को लक्ष्य बनाकर चलने वाले लोग अपनी क्षियात्मकता की तरफ से बचकर नहीं रह सकते। उन्हें यह भी बड़ी भांति विदित होना चाहिए कि मनुष्य के कार्यों का स्वयं बर्तन पर और चारों तरफ के समाज के जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है। अपना जीवन-यात्रा प्रारम्भ करते समय हमें अपने व्यक्तिगत कामिष्ठों के प्रति जागरूक रहना चाहिए। व्यक्ति को यह जानना चाहिए कि वह चाहे अपने घर में हो चाहे किसी व्यापार-मस्त्रा के मंच पर, मातृमोदाम में विद्यालय में अपने मित्रों की संमति में अपना एकाकी हो—गभीर बयह अपने धाधार-व्यवहार का एक स्पष्ट प्रभाव छोड़ता है और उसकी जीवन-वृत्ति पर इस प्रभाव का प्रबुद्धा या बुरा किसी एक प्रकार का असर पकर पड़ता है। धाधार-व्यवहार का एक ऐसा प्रभाव होता है जो एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से मिलते समय—चाहे दूसरा पुरुष हो महिला हो या बच्चा—उसपर छोड़ता ही है। इन्हीं प्रभावों के धाधार पर लोगों का पारस्परिक सम्बन्ध और भावनाएं बनती हैं। यही कारण है कि सम्य समाज में पामीन व्यक्तियों की प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। यदि धापका मरिष्ठक नकारात्मक और उरिष्ण होना तो उसका बहुर धापके कायव्यापार हो विपत्ति में डालेगा। यह अनिष्ट प्रभाव धापके अपने प्रयत्नों को नि-मरुव करेगा और धापकी सुख और समृद्धि में व्याबाध करेगा। उसी प्रकार, जैसे तीव्र धम्म बढ़िया से बढ़िया इस्त्रात को बर्भर कर देता है। इसके विपरीत यदि धापके व्यक्तित्व से विरुवसनीय और मरिष्ठक से अेष्ठता का भाव अमकेगा तो दूसरे लोग धापकी तरफ बाकपित होंगे और बिना जाने ही धापके प्रति नरुभावना रखेंगे। इस सवृगुण से धापको सभी लोगों का राक्ति-पामी सहयोग प्राप्त होगा। धापकी मित्र और प्रबुद्धर प्राप्त होंगे और त्रिम किसी कार्य को धाप हाव में लेंगे। सतमें अष्टन होने में सहायता प्राप्त होगी। इसमें धापकी भूलों का परिष्कार होना और जो छोटी-मोटी प्रयोप्यताएं धापके व्यक्तित्व में हैं उनही रातिवृत्ति होगी और अनेक नैव विमुष्ण हो जाएंगे।

इस प्रकार दुनिया को हम बितना देते हैं, उतने ही परिमाण में दुनिया से हमें प्राप्त होता है। बुरा करने से बुरा और अच्छा करने से अच्छा फल प्राप्त होता है। यदि साधारण बुद्धिपूर्ण है तो साधारण प्रमाण हीए होना और सफलता भी साबुरी होगी। यदि साधारण चरित्र श्रेष्ठ होना तो साधारण स्थायी शक्ति मिलेगी और साधारण सफलता के सिखार पर पहुंचे। हम काम करते हैं और दुनिया उतना हमें प्रतिदान देती है। मूर्ख जब असफल होते हैं तो एक-दूसरे पर ही दोषारोपण करते हैं परन्तु बुद्धिमान साधारण अपनी बुद्धियों पर बुद्धिपाठ करता है और उनमें परिष्कार करता है और इस प्रकार सफलता का भागी बनता है।

सतर्क और जागरूक मस्तिष्क वाला व्यक्ति अपने उद्देश्य को प्राप्त करने में सफल होता है और यदि वह सर्वत्र समस्त परिस्थितियों में जागरूक और जीबन्त रहता है और चरित्र के दोषों में परिष्कार करता है तो दुनिया की कोई परिस्थिति सबका सब उसे परास्त नहीं कर सकते और दुनिया की कोई शक्ति उसके समय की उपमर्श में बाधा नहीं डाल सकती।

उद्यम से हमारे जीवन में प्रयुक्तता और प्राप्ति का साधिष्कार होता है। उद्यमी लोग ही समाज में सबसे अधिक सुखी पाए जाते हैं। वे हमेशा सबसे अधिक सम्पत्तिवानलोग मने ही न हों, लेकिन उनका हृदय सर्वत्र प्रयत्न और हलका रहता है और जो कुछ वे करते हैं या जो कुछ उन्हें प्राप्त होता है, उसीमें वे संतोष का अनुभव करते हैं। इस बुद्धि से वे सबसे अधिक सम्पत्तिवानलोग कहें या सकते हैं क्योंकि उन्हें सबसे अधिक भवत्कृपा प्राप्त होती है। उद्यमी लोग कभी एकदमियों के समान केवल सोचने-माने में सबका अपनी साधिष्यियों और विपत्तियों को एक स्वार्थी व्यक्ति की तरह बड़ा बड़ा कर नहीं बताते। यह बेलने की बात है कि उन्हीं चीजों पर सबसे अधिक चमक होती है जो सबसे अधिक व्यवहार में आई जाती है। इस प्रकार वे व्यक्ति जो सर्वत्र उद्यम करते हैं, उनका मुद्रमण्डल शीघ्र रहता है और उनकी धारणाओं में तेज होता है। जो चीजें व्यवहार में आई जाती हैं उनपर जंग बड़ जाता है। समय का हलन करने

वाले व्यक्ति का चित्त उद्विग्न रहता है और दुष्प्रवृत्तियों में फँसा रहता है। जो व्यक्ति प्रकर्मव्यवस्था में ही जीवन की सार्थकता मानते हैं वे एक तरह से अपनी नपुंसकता की ही शोचना करते हैं। क्योंकि दुनिया ज्ञान और उपयोगी वस्तुओं से इतनी सम्पन्न है और हमारी जीवन शक्ति इतनी शक्ति है कि हम कभी भी फलतः समय का प्रोचित्य सिद्ध ही नहीं कर सकते। बिचारहीन मस्तिष्क और संवेदनहीन हृदय वाले लोग जीवन के प्रत्येक क्षण को उपयोगी और मुसीबना समझते हैं और यदि वह कभी समय की चर्चा करते भी हैं तो केवल यही कि उनके पास समय इतना थोड़ा है और जीवन में मरने के लिए काम इतना अधिक है कि साँस लेने का अवकाश भी नहीं मिलता।

उद्यम से स्वास्थ्य और समृद्धि में वृद्धि होती है। उद्यमी आदमी सदैव पकड़कर अपनी शक्ति में प्रवेश करता है। इसलिए उसका विद्यालय सम्पूर्ण और मजबूत होता है और प्रत्येक घण्टे दिन प्रातःकाल सव्या स्याम करते समय वह तरोताज़मी और शक्ति का अनुभव करता है और अपने दिन के आह्लादकारी कर्तव्य के प्रति वह सम्यक् होता है। उसकी मूर्खता और पावन-शक्ति बुद्धि रहती है। मनोरंजन से उसे स्फूर्ति मिलती है और उद्यम से उसे शक्ति प्राप्त होती है। ऐसे आदर्शियों का भला हुआ और ईश्वर से क्या बास्ता हा सकता है! ऐसी अशोभन भावनाएँ तो उन्हींके बारे में रहती हैं जो कम परिश्रम करते हैं लेकिन पैसा की तरह उटकर खाते हैं। समाज में जो माय अपनी उपयोगिता सिद्ध करते हैं, वे दैनिक जीवन में एक उत्कृष्टता का आविष्कार करते हैं और दुनिया को गति प्रदान करते हैं।

ध्येयनिष्ठा—एक महान शिल्पक का कथन है कि ध्येयनिष्ठा प्रयत्न का पथ है। जिन लोगों की अपने ध्येय में निष्ठा होती है, वे कभी मरण को प्राप्त नहीं होते और जिनमें निष्ठा नहीं होती वे जीवन ही मृत्यु के समान होते हैं। सम्पूर्ण मस्तिष्क का किसी कार्य में लगाया ही ध्येयनिष्ठा है। जो कम हम करते हैं वस्तुतः वही हमारा जीवन होता है। ध्येयनिष्ठ लोग जब तक किसी कार्य को करके सन्तोष का अनुभव नहीं करते जब तक उन्हें उसमें उत्कृष्टतम

सफलता प्राप्त नहीं हो जाती और ऐसे ही व्यक्ति खेप्टता प्राप्त करते हैं। ऐसे लोग दुनिया में बहुत हैं जो मापरवाह होते हैं और अपने मन से काम करते हैं और अपने मौजे कारणों पर खिन्न रहते हैं। उनके मुकाबले में ध्येयनिष्ठ लोग समय ही बमकटे हैं। ध्येयनिष्ठ लोगों के लिए हमेशा ही बहुत काम होता है। कोई भी ध्येयनिष्ठ पुरुष या महिला ऐसे नहीं होते जिन्हें जीवन में उच्च पर प्राप्त न हो। ऐसे लोग कर्तव्यपरमण और उद्यमी होते हैं और जब तक वे अपने कार्य को खेप्टतम रूप से नहीं कर लेते जब तक उन्हें बैन नहीं पड़ता। सारी दुनिया उनके धर्मों को पुरस्कृत करने के लिए बेचैन रहती है। यह पुरस्कार चाहे पारिधमिक के रूप में हो या सम्पति स्थाति मित्रता प्रभाव सुख-सुविधा या जीवन-समृद्धि के रूप में और साधना चाहे पारिधमिक शौटक या धार्मिक हो।

ध्येयनिष्ठ लोग अपने कर्म और चरित्र में सबैव ही सत्तर प्रगति करते हैं। इसी आधार पर वे बीबित रहते हैं और मरते नहीं। क्योंकि यवरोप ही मृत्यु है और वहाँ सतत प्रगति और सबैव हकता की ओर अनुसुध कार्यकुशलता है, वहाँ यवरोप और मृत्यु को स्वान नहीं मिस सकता।

इस प्रकार इस प्रथम स्तम्भ का निर्माण होता है। जो व्यक्ति इसका निर्माण धम्धी तरह करता है और हकतापूर्वक उसे स्थापित करता है वह जीवन के प्रत्येक कार्यव्यापार में सबैव धक्तिशाली और स्वामी सहयोग प्राप्त करता है।

## २ | मितव्ययिता

प्रकृति के बारे में यह कहा जाता है कि उसमें शून्यता नहीं होती। प्रकृति के किसी तत्व का अपभ्रम्य नहीं होता। प्रकृति के धर्मोक्ति विधान में प्रत्येक वस्तु सुरक्षित रहती है और उसका अनुपयोग होता है। यहाँ तक कि मत्त-भूत भी रासायनिक प्रक्रियाओं द्वारा परिवर्तित हो जाता है और नया रूप धारण कर लेता है। प्रकृति पदार्थों का विनाश सीधे बिम्बस द्वारा नहीं बल्कि उन तत्वों का कामाकल्प करके उन्हें मयूर और पवित्र बनाकर करती है ताकि वह बिल्कुल और आनन्द का मोरु में आविष्कार हो सक।

प्रकृति में जो मितव्ययिता है उस एक सार्वभौम सिद्धान्त माना जा सकता है। मितव्ययिता धारणी के लिए नैतिक सद्गुण है— जिसकी सहायता से वह अपनी शक्तियों को सुरक्षित रख पाता है और अपने चारों तरफ से सामाजिक जीवन में एक कार्यशील घटक के रूप में अपने स्थान को सुरक्षित रखता है।

धार्मिक मितव्ययिता तो इस सिद्धान्त का केवल एक अंग-भाग है, बरन् कहना चाहिए कि यह तो उस धर्मार्थ धर्मविधान का— जोकि पूर्ण रूप से मानसिक है और जिसकी निष्कृति आध्यात्मिकता में होती है—केवल एक धार्मिक धनीक-भाव है। एक धर्मविशेषज्ञ तबि को चाही में बदला करता है, चाही को सोने में और पीने का मोटी में परिवर्तन करता है और इन मोटी के सहारे वह धर्मन संख्याते में बुद्धि करता है। वैसे का इन कर्तों में परिवर्तन करके वह अपने

कार्यव्यापार-सम्बन्धी प्राथमिक प्रबन्ध में सफलता प्राप्त करता है।  
 धार्मिक धर्मशास्त्री अपनी भावनाओं को बुद्धिमत्ता में परि-  
 बर्तित करता है, बुद्धिमत्ता को सिद्धान्तों में परिवर्तित करता है और  
 सिद्धान्तों की अभिव्यक्ति उसके कर्म से होती है और ऐसे बुद्धिमत्ता  
 पूर्ण कार्यों में व्यस्त प्रभाव होता है। इस प्रकार के परिवर्तन से वह  
 अपने चरित्र निर्माण और जीवन-व्यवस्था में कौशल प्राप्त करता है।

वास्तविक मिश्रव्यवस्था सब चीजों में मध्यम मार्ग को ग्रहण  
 करने में है चाहे मार्ग पारिवर्तन हो या मानसिक। सम्पत्ति का व्य-  
 व्यय या अनुचित प्रयोग इन दोनों के मध्य का मार्ग ही मिश्रव्य-  
 व्यय है। चाहे वैसा हो या मानसिक शक्ति यदि उसका अपव्यय  
 किया जाएगा तो बन-बन शक्तिहीन हो जाएगा और यदि स्वार्थवश  
 इसे अपने पास बना लिया जाएगा तो भी वह शक्तिहीन हो जाएगा।  
 पूंजीयत या मानसिक कौशिल्य भी सत्ता है ज्यों न प्राप्त करनी हो  
 सत्ता के लिए उचित साधनों का संभय किया जाना अनिवार्य है  
 परन्तु संभय के उपरान्त उन्हें उचित उपयोग में लाना चाहिए। इत्य-  
 अथवा शक्ति का संभय करना तो केवल एक साधन है। साम्य  
 उपभोग में है। उपभोग से ही शक्ति प्राप्त होती है। निम्नलिखित  
 सात चीजों के मध्यम मार्ग को अपनाया ही सम्पूर्ण मिश्रव्यवस्था न  
 प्राप्त करता है

१. वैसा २. धीरज ३. बस्व ४. मनोरंजन ५. धारण
६. समय एवं ७. शक्ति।

वैसा परिवर्तन का प्रतीक है और उससे हमारी क्रय-शक्ति का  
 बोध होता है। वह व्यक्ति जो सम्पत्ति प्राप्त करना चाहता है और  
 वह व्यक्ति भी जो व्ययवस्त नहीं होना चाहता उसका यह फर्क है  
 कि वह इतना ध्यान करे कि किन प्रकार अपने व्यय को धाय  
 के अनुरूप बनाना है ताकि उसकी कार्यकारी पूंजी में सदैव अभिवृद्धि  
 होती रहे या जिसके द्वारा किसी भी संकटापन्न स्थिति का सामना  
 करने के लिए उसके हाथ में कुछ बना-सूजी हो। वह वैसा जो कि  
 विचारहीन तरीक़ाएँ और निरर्थक धामन्य या हानिकारक मोक्ष  
 विनाश की वस्तुएं प्राप्त करने के लिए व्यय किया जाता है, वस्तुतः

प्रथम ही किया जाता है। इससे हमारी शक्ति का विनाश होता है। क्योंकि जैसे मैं चाहे सीमित शक्ति हो और वह शक्ति निम्न धनी की ही क्यों न हो लेकिन साधन प्राप्त करना और उनका उचित और पवित्र वस्तुओं के प्रयोजन में व्यय करना ही उचित है। पैसा बाकिर एक शक्तिशाली साधन प्रबन्ध है और हमारे दैनिक जीवन में उसका एक स्पष्ट उपयोग है। एक फिन्सुस बर्ष प्रायः कमी मासवार नहीं हो सकता और वह मासवार होकर फिन्सुस बर्ष बनता है तो बहुत दीर्घ ही गरीब हो जाता है। इसी प्रकार बहुत सा मास-बीसत बीड़कर रखने वाला फिन्सुस प्रायः भी मासवार नहीं कहा जा सकता क्योंकि वह स्वयं भी प्रभावप्रस्त होता है और उसका व्यय पड़ा हुआ स्वयं उसको कार्य करने की शक्ति से संबंधित कर देता है। दूरदर्शी और समझ-बूझकर खर्च करने वाले लोग समुद्र होते हैं। वे बुद्धिमत्तानुबन्ध व्यय करते हैं और सावधानी के साथ बचाते हैं। इस प्रकार वे अपने क्षेत्र का विस्तार करते हैं।

जो गरीब प्रायः मासवार बनना चाहता है, उसे सबसे नीचे के स्तर से अपना प्रयत्न शुरू करना है। उसे अपनी सामर्थ्य के बाहर साधन-सम्पन्नता दिखाने की कोशिश नहीं करनी चाहिए। निम्नतम पराक्रम पर ही शेष और स्वान की सुविधा हो सकती है और प्रारम्भ करने के लिए यही सबसे अधिक सुरक्षित स्थान है, क्योंकि इससे नीचे कुछ भी नहीं है। सब कुछ ऊपर ही ऊपर है। बहुत-से नये व्यापारी फिन्सुस बर्षों और दिशाबट में पड़कर अपने लिए कुछ और विपत्ति का संघर्ष करते हैं क्योंकि वे यह समझते हैं कि सफलता के लिए इन चीजों का होना जरूरी है, लेकिन यह माय प्रारम्भना और प्रारम्भना का ही मार्ग है। किसी वस्तु को संतुलित और वास्तविक रूप में प्रारम्भ करके ही सफलता को सुनिश्चित बनाया जा सकता है न कि अपने स्वभाव और महत्त्व का घना-घनाप विनाश करके। जिसकी थोड़ी पूंजी हो उतना ही थोड़ा कार्यक्षेत्र होना चाहिए। पूंजी और क्षेत्र की तुलना हाथ और पैरों के बीच की तुलना है। इन दोनों चीजों को एक-दूसरे के समतुल्य होना चाहिए। अपनी पूंजी को संतुलित रखें



में लेना चाहिए। यह वायरा प्रारम्भ में जाहे बितना छोटा क्यों न हो लेकिन जिस प्रकार एक स्मान पर एकत्र होने वाली शक्ति अपनी अभिव्यक्ति के लिए बिस्तार चाहती है, उसी प्रकार यह वायरा भी धीरे-धीरे बढ़ता जाता जाएगा।

लेकिन सर्वोपरि यथार्थ यह है कि मिश्रभ्ययिता धीरे-छिन्नसर्वाँ दोनों में संतुलन रखना चाहिए।

भोजन हमारे शीर्ष एवं धारीरिक तथा मानसिक शक्ति का आधार होता है। आसपास में भी दूसरी चीजों की तरह एक मध्य मार्ग है। समृद्धि के आकांक्षी लोगों को उचित धीरे पुष्टिकारक भोजन प्राप्त होना चाहिए परन्तु आवश्यकता से अधिक नहीं। यह व्यक्ति को अपनी कंबूकी या तपस्या के कारण (ये दोनों ही रूप मिश्रभ्ययिता के समत उदाहरण हैं) धीरे को मुखा रखता है अपनी मानसिक धीरे धारीरिक शक्तियों को स्वयं क्षीण करता है धीरे इस प्रकार सफलता प्राप्ति के लिए अपने को असमर्थ बनाता है। ऐसा व्यक्ति पुनर्नि-मस्तिष्क होता है जिसका परिचाम निर्भीरता क रूप में श्रुति पोषण होता है।

पेट्र धारमी भोजन के आधिक्य के कारण अपना विनाश करता है। उतका पशु के समान पृथुम धीरे धारके प्रकार के बियो से मरा होता है। रोप धीरे कुटकार का केन्द्र होता है धीरे उतका मस्तिष्क उतरोत्तर पाश्चिकतापूर्ण धीरे प्राप्त एतर्ष धर्मोप्य होता जाता है। पेट्र होता एक बहुत ही निम्न धीरे पाश्चिकतापूर्ण दुर्मुष है, धीरे मध्यम मात्र ग्रहण करने वाले लोग पेट्रधों से पूजा करते हैं जो भोजन अपने खान-पान में मध्यम मार्ग अपनाते हैं, वही सर्व श्रेष्ठ कार्यकर्ता धीरे नेता बनते हैं। उन्हें ही उचित धारीरिक धीरे मानसिक क्षमता प्राप्त होती है। इस प्रकार मध्यम मात्र ग्रहण करने से वे जीवन के संघर्ष में उचित धीरे धान्द के साथ सफल होते हैं। बरत्र हमारे धीरे को ढंकने धीरे सुरक्षित रखने में सहायक होते हैं। बहुतसा इस स्पष्ट उद्देश्य से सम्बन्ध न रखकर केवल प्रदर्शन मात्र के लिए बरत्र धारण करते हैं। इस धाम में भी उदासीनता धीरे प्रदर्शन दोनों से बचना चाहिए क्योंकि प्रकृतित पीठि-रिवाज को

नकार-अबाध नहीं किया जा सकता। स्वच्छता हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग है। अनुचित बेचमुवा और अनबद्ध व्यक्तित्व वाले लोग भी सर्वत्र प्रचलित और एकाकी रहते हैं। किसी भी व्यक्ति को पोशाक जीवन में उसके पद के अनुकूल होनी चाहिए। वस्त्र भी अच्छी किस्म के होने चाहिए और सुतासिब तरीके से सिले होने चाहिए। पुराने वस्त्रों का बच तक कि वे बर्बर न हो जाएं, मसी प्रकार से अपभोग करना चाहिए। लेकिन उनके धारण करने का इंग उचित और शोभनीय होना चाहिए। यदि कोई व्यक्ति परीब है, तो फटे हुए वस्त्र पहनने से भी उसकी प्रतिष्ठा नहीं बटती लेकिन वे वस्त्र स्वच्छ होने चाहिए और उसी प्रकार पहनने का तरीका भी स्वच्छ और निमल होना चाहिए। लेकिन वस्त्रों का बिनासिता पूर्व प्रदर्शन एक दुपुन है और मने लोगों को चाहिए कि वे इससे बचने का भरसक प्रयत्न करें। मैं एक ऐसी महिला को जानता हूँ जिसके पास चासीस पोशाकें थीं और ऐसे पुरुष को भी जानता हूँ जिसके पास बीस बुनने की धड़ियाँ और हूट से लगभग एक दर्जन बरसातियाँ थीं और एक दूसरे ऐश धारिणी को भी जानता हूँ जिसके पास बीस तीस बोड़ी जूत थे। समूह लोग—जो इस प्रकार बिनासितापूर्व कपादानों पर अपना धन बहाते हैं—के वस्तुतः करीबी को ही निमल्यम देते हैं, क्योंकि यह किन्नूतसर्षी है और किन्नूतसर्षी प्रभाव को म्योठा देती है। इस प्रकार व्यर्थ नष्ट किया जाने वाला पैसा यदि विपत्तिग्रस्त लोगों को दे दिया जाए तो अधिक भोपस्कर हो।

वस्त्रामुपभोग तथा हीरे-जवाहरात को धारण करना हमारे प्रस्तावीन रिक्त मस्तिष्क का ही परिचायक है। शाहीन और उच्च लोग सर्वत्र ही धरने पर और मर्यादा के अनुकूल वस्त्र धारण करते हैं और धरने प्रतिरिक्त धन को अपनी संस्कृति और छद्मपुणों की अभिवृद्धि में व्यय करते हैं। गिदा और प्रगति के लक्षण उनके लिए व्यय को पोशाक के प्रदर्शन करने की धरना अधिक महत्वपूर्ण होते हैं। इस प्रकार साहित्य कला और विज्ञान को प्रोत्साहन मिलता है। वास्तव में मस्तिष्क और धारण का हीच्छव प्राप्त करना ही भोपस्कर है। विद्वत् मस्तिष्क में प्रतिभा और बुद्धिमत्ता है, वह शरीर

रहता है। धीम ही बुझा हो जाता है और किसी प्रकार की सफलता प्राप्त नहीं कर सकता। धीर जो व्यक्ति बुद्धिमत्तापूर्वक अपना समय बर्च करता है, उसे प्रतिष्ठा और ज्ञान की प्राप्ति होती है और समृद्धि उसके द्वारे पर मावती है। मष्ट किया हुआ मन पुन प्राप्त हो सकता है, परन्तु मष्ट किया हुआ समय पुन प्राप्त नहीं हो सकता। एक पुरानी कहावत है कि 'समय ही मन है'। इस प्रकार समय ही स्वास्थ्य शक्ति और प्रथिमा धीर बुद्धिमत्ता है। समय को उचित बेधियों में विनाशित करना चाहिए। काम विमान मोजन धीर मनोरंजन उचित समय पर करना चाहिए। इन चीजों के लिए तैयारी करने में व्यय समय मष्ट नहीं करना चाहिए। जो कुछ हमें स्यामाजायना तो हमें कार्य में अधिक दक्षता और सफलता प्राप्त होगी। जो व्यक्ति उचित समय पर उठने है, वे अपनी योजनाओं पर समय बर्च करते हैं और उचित अनुबन्ध विचन और पूर्व-कल्पना के साथ अपने को इन योजनाओं की पूर्ति में संलग्न करते हैं। वे ही व्यक्ति अपनेसाकृत अधिक कर्मकुशल और सफल सिद्ध होते हैं। वे व्यक्ति जो देर तक सोते हैं और उठने के तत्काल बाद कमेना करने के लिए मेज पर पहुँच जाते हैं कभी सफल नहीं हो सकते। इस प्रकार प्रातःकाल कमेना करने से पूर्व एक घंटे का समय दिन भर के काम काम पर विचार करने में व्यय करके अपने मन को अधिक उपयोगी बना सकते हैं। ऐसा करने से हमारे मन को शांति मिलती है अतिरिक्त सुलता है और अपनी शक्तियों को अधिक प्रभावकारी ढंग से प्रयोग करने का अवसर मिलता है। सबसे अधिक स्वामी सफलता नहीं होती है जोकि प्रातःकाल घाट बजने से पूर्व हमें प्राप्त हो जाती है। वे व्यक्ति जो प्रातःकाल घ. बजे उठते हैं उस घाटमी की अपेक्षा अपनी जीवन-यात्रा का बहुत अधिक सफर तय कर लेते हैं जो सोकर ही घाट बजे उठता है। घम्मा के प्रति लिप्ता हमारे जीवन की रीढ़ से बहुत बड़ी बाधा है। ऐसा व्यक्ति प्रतिदिन अपने प्रतिशुद्धी को शो-शो-शो बटे का विद्या प्रदान करता है। बर्ष भर में इस प्रकार प्रतिदिन शो-शो-शो बटे की पूर्ति सफलता को पुष्प और सुनिश्चित बनाती है।

कल्पना कीजिए कि ऐसे दो विरोधी व्यक्तियों की सफलता में तीस बर के बाद जितना बड़ा अन्तर हो जाएगा। बेर से सोकर उठने वाले लोग हमेशा हड़-हड़ करते हुए उठते हैं और जोए समय की सति पूर्ति करने के लिए सब काम अस्वबाजी में करते हैं जबकि अन्वबाजी से सभी कामों में असफलता प्राप्त होती है। प्रातःकाल अस्त्री उठने वाले लोग अपने समय को मितव्ययिता से खर्च करते हैं। उन्हें अस्व बाजी करने की जरूरत नहीं पड़ती। वे समय से पूर्व ही अपने कामों को पूरा कर लेते हैं। ऐसे ही व्यक्ति अपने काम को सति और सुर्गिब के साथ सम्पन्न कर सकते हैं और दिन के अन्त में ऐसे ही व्यक्ति अपने मन में सन्तोष का अनुभव कर सकते हैं और कोसल तथा सफलतापूर्वक किए हुए काम के परिमाण में भी बृद्धि कर सकते हैं।

समय में मितव्ययिता नाने के लिए हमें अपने जीवन में से बहुत-सी चीजें निरालनी होती हैं। ऐसे व्यसन जिनके हम सम्मस्त हो जाते हैं और बार-बार उनमें लिप्त होना चाहते हैं उनका बलिदान करके हमें अपने जीवन के मुख्य उद्देश्य के प्रति आगच्छ रहना होता है। जीवन को अनादरयक तत्वों से ध्यानपूर्वक निवास देना सफलता की सिद्धि में एक महत्वपूर्ण कारण सिद्ध होता है। सभी महान व्यक्ति इस कार्य में कुशल होते हैं। बस्तुतः समय की मितव्ययिता ही उनकी महत्ता का आधार बनती है। मितव्ययिता का यही तत्व हमारे मन हमारे बर्मे और हमारे मायम में से अनिश्चित चीजों को निकालने में सहायक होता है। मूख और असफल लोग सर्वत्र तापरबाही के साथ उद्देश्यहीन खर्च में अपने को फँसाते रहते हैं और जो कोई भी बस्तु अच्छी या बुरी उनके रास्ते में घाती है उसे मन में रख लेते हैं। एक अच्छे मितव्ययी व्यक्ति का अस्तित्व एक ऐसा यंत्र होता है जो निरर्थक बस्तुओं को निस्तारित देता जाता है और बेबल उर्ध्वी बस्तुओं को ग्रहण करता है जो जीवन-व्यापार में उपयोगी सिद्ध होती हैं। भाषण में वह केवल बुने हुए वस्त्रों का प्रयोग करता है और इन तरह अपनी शक्ति को व्यर्थ नष्ट होने नहीं देता।

नियम समय पर अपना ग्रहण करने और नियम समय पर अपना त्याग करने का नियम हमारे जीवन के अत्यन्त लाभ को उद्देश्यपूर्ण

विचारों और प्रभावकारी कार्यों से सम्पन्न करता है। संयम क  
बड़ी सच्ची मितव्ययिता है।

धर्म का मितव्यय हम अपने में सच्ची भावों डालकर ही कर  
सकते हैं। सभी प्रकार के दुर्ब्यसन हमारी धर्म के भयंकर विनाश  
का कारण बनते हैं। बुरी भादतो का धिक्कार होने से हमारी धर्म  
का विचारहीनतापूर्ण अपव्यय होता है। यदि हम इस धर्म को  
सुरक्षित रखें और उचित दिशा में उसका प्रयोग करें तो हम बड़ी  
से बड़ी सफलताओं के स्वामी बन सकते हैं। यदि हम उपर्युक्त  
बीजों का विचारपूर्वक धम्यास कर लें तो हमें अपनी सक्तियों क  
सुरक्षित रखने में सहायता मिलेगी। व्यक्ति का कर्म्य है कि वह  
इससे भी एक कदम आगे बढ़कर अपनी धर्म का सतर्कतापूर्वक  
स्वामी बन जाए और किसी भी प्रकार के दुर्ब्यसन में अपने को लिप्त  
न होने दे। क्योंकि शारीरिक दुर्ब्यसनों में लिप्त रहना ही केवलमान  
बुद्धि नहीं है, हमें समस्त मानसिक दुर्ब्यसनों धर्म जल्दबाजी  
विना उद्विग्नता विरामा क्रोध सह और ईर्ष्या करने से भी धर्म  
को बचाना है। ये दुर्ब्यस हमारे मस्तिष्क को विगुणन कर देते हैं  
मानसिक दुर्ब्यसों के यही वे रूप हैं जिनसे चरित्रवान व्यक्ति क  
सामग्री से बचना चाहिए और उनपर विजय प्राप्त करनी चाहिए।  
बदमिजाजी के बार-बार पढ़ने वाले शीरो के कारण हमारी धर्म  
का जितना हास होता है यदि उनधर्म को नियमित और सुविचारित  
रूप से व्यय किया जाए तो इससे मन को धर्म प्राप्त होती है, चरित्र  
मभावकारी बनता है और धर्म सफलताएं प्राप्त करने की समत  
प्राप्त होती है। कोभी मनुष्य एक ऐसा धर्मिणी मनुष्य होता है जो  
अपनी मानसिक धर्म के दुर्ब्ययोग से अपने को बुझ बना लेता है।  
अपनी धर्म की धर्मिण्यक्ति में धर्मसंयम से काम लेना चाहिए।  
धीन के किनी भी धर्म में जाइए, कोभी व्यक्ति के मुकाबले धर्म  
धर्म की सर्व ही धर्मिण्य धर्म और धर्मिक धर्म होता है। लोगों  
के मन में उसके प्रति प्रतिष्ठा का भाव बनता है। बुरी भावों और  
धर्मिणी धर्मिण्यों का संयम करने में अपनी धर्म का अपव्यय  
किती प्रकार भी साधु नहीं। क्योंकि प्रत्येक धर्मिण्यक धर्मिण्य

हमारे जीवन-संघर्ष में बाधा बनता है और हमें विपत्ति तथा दुर्बलता का पिंकार-बनाता है।

इस प्रकार यह स्पष्ट हो जाता है कि विनियमितता का तद्देख केवल वैसे बचाना ही नहीं है बल्कि इससे भी अधिक यन्मीर और बुराभ्यागी है। यह हमारी प्रवृत्ति के प्रत्येक घण घोर जीवन के प्रत्येक विमाप को स्पष्ट करता है। एक पुण्यी कहावत है 'टेक केघर घाँऊ घोर घँस, एण्ड ही पाठकइस बिल टेक केघर घाँऊ बेमतेल्स'। जिसका अर्थ है—घरने पैसे की रक्षा कीबिए, दरया घपनी रसा स्वयं कर सेवा। यह एक ऐसी कहावत है, जिसपर ज्यतनों में फये हुए लोगों को ध्यानपूर्वक मनन करना चाहिए। ऐसे व्यक्ति घपनी मूल घक्ति में घक्तिबन नहीं होते वरन् वे घपनी घक्ति के दुखयोग से घपने को हीन बना लेते हैं। इन्हीं बाधनाघों में किबुलसर्ष होने वाली घक्ति को यदि यत्नपूर्वक नमूहीठ किया जाए तो घक्ति के प्रभावकारी रूप में उभरका कायावहन हो सकता है। इस प्रकार घपनी घमूय घक्ति का दुर्गुणों में व्यय करना वैसे को व्यय करने के समान है जिसके परिघाबस्वरूप हाय स्वयं नष्ट हो जाते हैं। इसी प्रकार हम भाधनाघों के वँसों का मघह करके मरुपुणों की स्वयंघुत्राघों का मघय करते हैं। घपनी निम्न भाधनाघों पर घधिकार किया जाए तो बड़ी-बड़ी मकमताएँ स्वयंघेब निधि के रूप में प्राप्त होती हैं।

विनियमितता के स्तम्भ का मजबूती के साथ निर्माण करने के लिए विनियमितता बस्तुघों की घाधनयकता होती है।

१ समभाव

३ साधनयम्पन्नता

२ कार्यरतता

४ मौनियता

समभाव प्रत्येक बस्तु में विनियमितता के सिधाल्य का महररूप घब है। यह समभाव हम बिरोधी घक्तिघयता से बचाना है और यम्पन्न कार्य घह्य करने में मद्दायक होगा। जो घनाघरयक घौर हाधनधारण है वलये भी ह्ये बचाता है। दुर्गुणों में निम्न होना किसी प्रकार भी समभाव का घोरक नहीं क्योंकि उतये घक्तिघयता काभाव बलिहित है। एक लक्या समभाव घह्य करने वाला घ्यक्ति से बखेड करना है। घानि का घचित प्रयोग यह नहीं है।

अपने हाथ रखकर उन्हें बला में बरतू उसका उचित प्रयोग वह है कि सुरक्षित दूरी पर रखकर हम अपने हाथों को गर्म कर लें। कुछ ही एक ऐसी शक्ति है, जो किसस स्पर्श-मात्र से बला डालती है। शक्ति कारक बिनाशिता को स्पर्श न करने में ही बुद्धिमत्ता है। बूझपान नसवार सेवन मरिचपान धीर पुषा जेमना ऐसी साधारण बुचइयां हैं जिन्होंने सइसों सोपों को विफलता रोग धीर विपत्ति से धाकाव किया है धीर सम्मत्त एक भी व्यक्ति को स्वास्थ्य सुख धीर सफलता प्रदान नहीं की। वह व्यक्ति जो इन दुर्व्यसनों पर विजय प्राप्त करता है समय प्रतिमा धीर साधनों में सम्मत्त होता है धीर उन व्यक्ति की अपेक्षा अधिक धाने बढ़ जाता है जो अपने को इन व्यसनों का शिकार बनाता है। दुनिया में सबसे अधिक स्वस्थ सुखी बीर्ष धानु के लोग बही होते हैं जो मध्य मार्ग बहूत करते हैं धीर अपनी धावतों पर अधिकार रखते हैं। समभाव रखने से हमारे जीवन उत्क सुरक्षित रहते हैं। अतिशयता करने से उनका बिनास होता है। वह व्यक्ति जो अपनी बासनाओं पर विजय प्राप्त करता हुआ समभाव बहूत करता है, ज्ञान धीर बुद्धिमत्ता के साथ-साथ सुख धीर स्वास्थ्य भी प्राप्त करता है धीर इस प्रकार योग्यता धीर प्रभाव के सर्वोच्च शिखर को प्राप्त करता है। जीवन में असमभाव रखकर बसने वाले लोग अपनी ही मूर्खता से अपना बिनाश करते हैं धीर अपनी लसताओं को बलम बनाते हैं, धीर इस प्रकार स्वामी सफलता प्राप्त करने के स्थान पर ने एक मरुवायी धीर अस्थिर समृद्धि ही प्राप्त करते हैं। कार्यबलता का सुख हमें अपने प्रभाव धीर समृद्धि के उचित संरक्षण से ही प्राप्त होता है। अथि स्तर की बलता अथि हम चातुर्ष्य धीर बलता प्राप्त होती है। अथि स्तर की बलता अथि हम चातुर्ष्य धीर प्रतिमा की संज्ञा देते हैं, सामर्थ्य के उच्चतर परिणाम में एकाप्री क्रिया से ही प्राप्त होती है। बहुधा अथि कार्य से लोगों को प्रेम होता है, उसीमें उन्हें निपुणता प्राप्त होती है, क्योंकि उनका मस्तिष्क निरन्तर उसी वस्तु पर केन्द्रित होता है। बलता मात्राधिक मितव्ययिता का ही परिणाम है जो शिखर को धाबिष्कार धीर क्रियाशीलता में परिवर्तित करता है। बिना बलता के समृद्धि प्राप्त नहीं हो सकती

घौर बिलनी बलता हूँ प्राप्त होगी उसीके अनुपात से समृद्धि भी हूँ प्राप्त होबी। प्राकृतिक विकास प्रक्रिया के अनुसार बलताहीन लोग अपने उचित स्थान पर पहुँच जाते हैं। उन्हें अपेक्षाकृत कम पारिष्मिक बिलता है और वे बहुधा बेकार रहते हैं। ऐसे प्राथमियों को कौन अपने यहाँ काम देगा जो मुनासिब तौर पर अपना काम नहीं करते। उदारतापूर्वक बोर्ड मानिक कमी-कमी देना करके जैसे ही ऐसे व्यक्ति को अपने यहाँ स्थान दे दे। व्यापार कार्यालय या घर का कामकाज समन्वित प्रिव्याधीनता के केन्द्र होते हैं। वे घान पर पहले वाली संस्थाएँ नहीं होतीं और यही कारण है कि औद्योगिक संस्थाएँ सभी परिमाण में सफल प्रयत्न प्रसफल होती हैं जिस परिमाण में उनका व्यक्तिगत कार्यकर्ता योग्य प्रयत्न प्रयोग्य होता है।

बिचार और ध्यान के एकत्र करने से ही कार्यबलता का पुनः प्राप्त होना है। निरह्वय और बिचारहीन लोग अक्सर बेकार रहते हैं। वे बीराहों पर ही डोलने देने जाते हैं। वे सरल से काम को भी उचित रीति से सम्पन्न नहीं करते क्योंकि वे अपने बिचार और ध्यान को एक बिन्दु पर केन्द्रित नहीं कर सकते। मेरे एक परिचित सख्तन के एक व्यक्ति को शिक्षिका साफ करने पर लगाया। परन्तु यह व्यक्ति इतने दिनों निरह्वय रह चुका था और पद्धतिपूर्ण बिचार कर सकने में इतना असम हो चुका था कि वह शिक्षिका साफ भी नहीं कर सका। जब उसे शिक्षिका साफ करने का उचित तरीका बताया गया तब भी वह निरह्वय-नास्तन नहीं कर सका। इस उदाहरण से यह स्पष्ट हो जाता है कि मामूली से मामूली काम में भी कार्य बलता की आवश्यकता होती है। कार्यबलता हाथ ही व्यक्ति का स्थान समाज में निर्दिष्ट होता है और सीढ़ी दर सीढ़ी जैसे-जैसे उसकी कार्यबलता बढ़ती है वह उन्नततर बड़ी से बड़ी समताओं का अपने धन्दर में बिचार करता जाता है। एक छोटा कारीगर अपने धोकारों के प्रयोग करने में निपुण होता है। इसी प्रकार एक छोटे घादमी को भी अपने बिचारों के निदोशन में दख होना चाहिए। बलता का सर्वोत्तम रूप ही बुद्धिबलता है। प्रत्येक कार्य को करने का एक ही उचित तरीका होता है लेकिन उसको मसत करने के हीकों





## ३ | सत्यनिष्ठा

समृद्धि कोई सस्ता सीरा नहीं। समृद्धि को बन करने के लिए मूल्य के रूप में दो चीजों की आवश्यकता पड़ती है—ममकायी के साथ किया हुआ मम और नैतिक सामर्थ्य। जिस प्रकार एक कुम्हड़ा अधिक समय तक नहीं ठहर सकता उसी प्रकार बोझाघड़ी भी अधिक समय तक सञ्चालित नहीं हो सकती। बोझाघड़ी से बोझे समय के लिए सेबी के साथ बन-बीजत भल ही रण्टीकीजासके परन्तु घन्टो गला उड़का बिनाय घनरपम्मावी है। बोझाघड़ी से कभी कुछ प्राप्त नहीं हुआ और कमी हो भी नहीं सकता। क्षणिक साम उससे भले ही हो जाए लेकिन उससे होने वाली हानि अपने साथ बहुत कुछ ले जाती है। परन्तु बोझाघड़ी करना केवल बेईमानीपुरुषक बन बनाने तक ही सीमित नहीं है। वे सभी लोग जो किसी वस्तु का पूरा मूल्य चुकाए बिना उसे प्राप्त करने की कोशिश करते हैं, बोझाघड़ी करते हैं, चाहे वे इस कार्य से परमत हों या न हों। जो व्यक्ति जाल-बूमकर और मम लिए बन लाभ करने का प्रयत्न करता है, मानसिक रूप से वह जोर जोर तस्कर की कोटि में आ जाता है, और दर-अदर ऐसे लोगों के प्रभाव में भी आ जाता है जो स्वयं उसकी पूंजी को हड़म कर लेते हैं। जोर नोन होता है?—वह व्यक्ति जो बैरकानूनी ढीर पर वस्तुओं का पूरा मूल्य चुकाए बिना उपचार करने की रण्टा से प्रति प्रेत होगा है। जो व्यक्ति समृद्धिवादी होना चाहता है, उड़का घट करतव्य हो जाता है कि आर्थिक व्यवसायान्तिक रूप में अपनी रण्टिद

होते हैं और नये विचारों के लोग ही उन्मत्त करते हैं। दूसरे लोग पतन के पथ में गिर जाते हैं।

मौलिकता हमें तभी प्राप्त होती है जिस समय हमारे साधन—सम्पन्नता परिपक्वता और पूर्वता को प्राप्त कर लेते हैं। वहाँ मौलिकता है वही प्रतिभा है। प्रतिभासम्पन्न लोग बुनिया के प्रकाश-सम्पन्न होते हैं। मनुष्य जिस किसी काम को हाथ में उठाता है, उसे सम्पन्न करने में उसके समान ही उसका एकमात्र अवसम्पन्न बनते हैं। दूसरों से सीखते हुए भी हमें उसका अनुकरण नहीं करना चाहिए, बल्कि अपने कार्य में अव्यवसाय के द्वारा एक नवीनता और मौलिकता उत्पन्न करनी चाहिए। मौलिक व्यक्ति ही बुनिया में अपना ठिठकंठा कर सकता है। प्रारम्भ में ऐसे व्यक्तियों के प्रति अपेक्षा की जा सकती है, परन्तु अवसतोपत्ता उन्हें स्वीकार किया जाता है और वे मानवता के लिए धारण बनते हैं। मौलिकता उत्पन्न करने की आवश्यकता पर अधिकार कर लेने के उपरान्त व्यक्ति लोकनाटक के रूप में प्रतिष्ठित होता है और शान और बलता के किसी भी विधान में उसे नेता के रूप में स्वीकार किया जाता है। परन्तु मौलिकता किसीपर बोयी नहीं जा सकती वह स्वयं विकसित होती है। एक के बाद दूसरी कार्यबलता और नैपुण्य की प्रक्रिया से होती हुई और मानसिक व्यक्तियों के उचित और पूर्ण उपयोग द्वारा प्राप्त निपुणता के परिपाक के अनुपात से वह उच्च से उच्चतर स्तर को प्राप्त होती है। वह व्यक्ति जो किसी काम के प्रति अज्ञानता से अपने-आप को अर्पित करता है और अपनी समस्त शक्तियों को उसमें केन्द्रित करता है, एक न एक दिन ऐसा अवस्य पाता है कि बुनिया एक सामर्थ्यवान व्यक्ति के रूप में उसका स्वागत करती है। और फाँसीसी सेकक बालकक के रूप में उसका स्वागत करती है। और बार बार बोधित किया जा — मैं अब एक सेनावी व्यक्ति बनने वाला हूँ। इसी प्रकार प्रत्येक व्यक्ति अपनी प्रतिभा की खोज करता हुआ मौलिक प्रतिभाओं के रूप में मानवता के लिए नवीनतर, उच्चतर और व्यक्तियों के मध्य जोकि मानवता के लिए नवीनतर, उच्चतर और अधिक उपयोगी विचारों का समेष करते हैं।

## ३ | सत्यनिष्ठा

समृद्धि कोई सस्ता सीरा नहीं। समृद्धि को खर्च करने के लिए मूल्य के रूप में दो चीजों की आवश्यकता पड़ती है—मननदायी के साथ किया हुआ मय और नैतिक सामर्थ्य। जिस प्रकार एक बुझबुझा प्रायिक समय तक नहीं टहर सकता उसी प्रकार बाबापढ़ी भी प्रायिक समय तक सफल सिद्ध नहीं हो सकती। बाबापढ़ी से थोड़े समय के लिए पैसी के साथ बन-बोनाय मने ही इन्हीं की जासके परन्तु धनतो-पन्ना उसका बिनाय प्रकरयम्मावी है। बाबापढ़ी से कमी बुझ प्राप्त ही हुआ और कमी हो भी नहीं सकता। प्रायिक काम उससे मने ही हो जाए लेकिन उससे हाने वाली हानि अपने साथ बहुत बुझ ले जाती है। बरन्तु बाबापढ़ी करना केवल केईमानीपुर्बक बन कमाने तक ही सीमित नहीं है। वे सभी लोग जो किसी बन्तु का पूरा मूल्य बुझाए बिना उसे प्राप्त करने की कोशिश करते हैं बाबापढ़ी करते हैं बाहे के इस साथ से प्रबन्ध हो या न हों। जो व्यक्ति जान-बूझकर मनेर मय लिए बन-नाश करने का प्रयत्न करता है, मानसिक रूप से वह और और तस्कर की कोटि में आ जाता है और देर-समेर ऐसे लोगों के प्रभाव में भी आ जाता है जो स्वयं उसकी पूंजी की हजम कर लेते हैं। और जीत होता है?—बहु व्यक्ति को बरदाशूनी तीर पर बन्तुओं का पूरा मूल्य बुझाए बिना उनपर प्रबिचार करने को इच्छा स मनेर प्रय होता है। जो व्यक्ति समृद्धिप्राप्ती होना चाहता है, उसका यह कर्तव्य हो जाता है कि प्रायिक प्रबन्ध मानसिक रूप में पूरनी इच्छित

बायीं भी समिहित है, परन्तु इसके भी कुछ धार्मिक इतका दर्भ होजा है। सत्यनिष्ठा मानव समाज की पीढ़ की हठी है। हमला मानवीय समाज इसीके सहारे बढ़ा होता है। बिना सत्यनिष्ठा के एक व्यक्ति को दूसरे पर न आरोप हो सकता है और न बिस्वास और इस प्रकार सभी मामों में व्यापार की बर्से दिस जाती है।

जिस प्रकार सूठे बादमी यह समझते हैं कि दुनिया के सभी लोग सूठे हैं उनी प्रकार सत्यनिष्ठ लोग भी नहीं समझते हैं कि दुनिया के सभी लोग सत्यनिष्ठ हैं। वे दूसरों पर आरोप करते हैं और दूसरे उनपर आरोप करते हैं। अपने उदार मन और निर्भय दृष्टि से वे अपने माथ जोला करते हैं। इससे न ही भाव को बहुत प्रच्छी ठण्ड प्रले में प्रचफम होता है। इससे न ही भाव को बहुत प्रच्छी ठण्ड हा है, दूसरे लोगों पर आरोप करे और वे धापके प्रति धम्भे से बसे ही वे व्यापार के नियमों का पालन करते हुए धापके प्रति दुष्प्रकार ही क्यों न करते हों।

सत्यनिष्ठ व्यक्ति अपने उपस्थिति से ही अपने बायें तरफ के लोगों में नैतिकता का वातावरण तैयार करता है और अपने प्रभाव से उन्हें दोस्त बनाता है। लोगों का एक-दूसरे पर खबरस्त प्रभाव पड़ता है और क्योंकि प्रच्छाई बुद्धि से हमेशा ही बनवती होती है इसलिए प्रच्छा बादमी अपने संपर्क से दुर्जन और बरे प्राबमियों को लज्जित करता है और साथ ही उन्हें ऊंचा उठाने में सहायक होता है।

सत्यनिष्ठ व्यक्ति के बायें तरफ एक गरिमा होती है जो दूसरे लोगों में भय का सकार करती है और साथ ही उन्हें प्रच्छाई की ओर प्रेरित भी करती है। ऊंचे से ऊंचा आर्थिक धुप भी नैतिक गरिमा की मुलपा में नहीं रखा जा सकता। बड़े से बड़े प्रतिष्ठा उममन व्यक्ति की धपेक्षा भी सत्यनिष्ठ व्यक्ति को दुनिया में धार्मिक ऊंचा पद दिया जाता है। बकमिस्तर का कहना है 'व्यतग्य सत्य निष्ठा की नैतिक गरिमा प्रकृति की सर्वोपरि उदात्त वस्तु है। इसी पुण में जनमायकों का निर्माण होता है। प्रविचलित सत्यनिष्ठ वाले लोग ही मायकत्व को प्राप्त करते हैं। इस मायकत्व की प्रविचलित

के लिए केवल धनसुर ही देर होती है। ऐसे व्यक्ति स्वामी धानन्द प्राप्ति के सक्क्य से अनुप्रेरित होते हैं। एक प्रतिष्ठसम्पन्न व्यक्ति मसे ही जीवन का वास्तविक मुक्त प्राप्ति न कर सके लेकिन सत्य निष्ठ व्यक्ति के बारे में ऐसा नहीं होता। दुनिया की कोई भी वस्तु न बीमारी न बकारी और न ही मृत्यु उसे अपने स्वामी सतोप से वंचित कर सकती है।

सत्यनिष्ठा हमें सीधा समृद्धि की ओर प्रसर करती है। चार सीढ़ियाँ हैं जिनपर चढ़कर हम समृद्धि की ओर बढ़ते हैं। प्रथम सीढ़ी यह है कि सत्यनिष्ठ व्यक्ति हमेशा ही दूसरों का विरवासपात्र बनता है। द्वितीय यह कि दूसरों का विरवासपात्र होने से लोग उसपर भरोसा करना शुरू कर देते हैं। तृतीय यह कि इस विरवास की प्राप्ति होने पर उस व्यक्ति का प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। चतुर्थ यह कि यह प्रतिष्ठा उत्तरोत्तर बढ़ती जाती है और उसके लिए सफलता का साधन बनती है।

बर्दशानी का परिणाम इसके विपरीत होता है। दूसरों के साथ विरवासपात्र बनने हम दूसरों में अपने प्रति संदेह और अविरवास पैदा करते हैं जिनके कारण हम बदनाम होते हैं और परिणाम के रूप में असफलता ही हाथ लगती है।

सत्यनिष्ठा के स्तम्भ को निम्नलिखित चार शक्तिशाली तत्वों से सम्पुष्ट किया जा सकता है

- |             |              |
|-------------|--------------|
| १ ईमानदारी  | ३ सौहार्दयता |
| २ निर्भीकता | ४ धन्यता     |

ईमानदारी सफलता का सबसे अधिक विरवसनीय तत्व है। एक दिन ऐसा आएगा कि जब बर्दशान धारमी दुःख और विपत्ति में पंथकर अपनी बर्दशानी पर पश्चात्ताप करने लगता है। लेकिन ऐसा कोई भी धारमी नहीं जैसे अपनी ईमानदारी पर पश्चात्ताप करना पडा हो। हालांकि सभी-सभी ईमानदार धारमी भी असफल हो पाते हैं क्योंकि वे निरस्ययिता योजना तथा व्यवस्था जैसे तीन स्तम्भों का निर्माण करने में असफल रहते हैं। परन्तु उनकी असफलता अपनी अधिक दुःखदायी नहीं होती बितनी कि बर्दशान व्यक्ति

की होती है। कम से कम उन्हें इतना सम्योप तो होता है कि उन्होंने कभी किसी व्यक्ति को बोझा नहीं दिया। अपने जीवन के संघर्षकार युक्त क्षणों में भी वे अपनी धार्मिक पवित्रता पर सम्योप अनुभव कर सकते हैं।

प्रसामी लोग यह सोचते हैं कि समृद्धि प्राप्त करने के लिए बेईमानी ही सबसे सीधा मार्ग है। ऐसा इसलिए है कि वे बेईमानी पर धारण करते हैं। बेईमान धारणी नैतिकता की दृष्टि से प्रचुर पपी होता है। जिस प्रकार एक धारणी केवल तात्कालिक मानक को ही देखता है, उसके प्रतिप पतनशील परिणाम को नहीं देखता उसी प्रकार एक बेईमान धारणी उसके तात्कालिक लाभ को ही देखता है, उसके धार्मिक परिणाम को नहीं देखता। वह नहीं समझ पाता कि इस प्रकार के धारण से उसका चरित्र नष्ट होता है और वह अपने व्यापार का विघ्न कर देता है। इसी प्रकार दुष्टों के साम को अपनी जेब में रखकर भले ही हम यह सोचें कि किसी भी धारणी की धारणा हीर सफलता के साथ हमने दुष्टों को उग लिया है, लेकिन हम इस सफलता से धारण नहीं होते कि ऐसा करके हमने स्वयं अपने को ही क्षता है। बेईमानी से प्राप्त हुए पैसे को मय मूर से भागत जाना है और इस त्याग से बचने का कोई भी मार्ग नहीं है। जिस प्रकार प्राकृत में छेका हुआ पत्थर दुर्लभाकपन-सिद्धांत के द्वारा पृथ्वी पर ही लौटकर जाता है, उसी प्रकार नैतिक दुस्त्वा कर्षण भी अस्तित्वनाश होता है।

को व्यापारी हमें सा अपने छायाकों से मूठ बोलने की धरणा करता है। वह अपने चारों तरफ समूह, धारिणाथ और बुना ही एकत्र करता है। नैतिक रूप से दुर्बल लोग ही उनके धारणों का पालन करते हैं, मने ही वे इस प्रभुम कार्य से अपनी धारणाको प्रपन्न करने में बाधित होते हैं। पत्थर मन में अपने प्रति बुना धारण रखते हैं। ऐसे विनाश वातावरण में मध्यता किन प्रकार प्राप्त हो सकती है! इस प्रकार के व्यापार में विघ्न कर धा धारण हीर एक न एक दिन अपरिहार्य रूप से उसका पतन होता है। ईमानदार धारिण धारण ही सकता है लेकिन अपनी ईमान

दारी के कारण नहीं। उसकी असफलता भी प्रतिष्ठित होती है और उससे उसके चरित्र और ब्याक्ति की हानि नहीं होती। निस्सम्बेह किसी विद्या में सफलता प्राप्त करने की सक्षमता उसे अपनी हीनताओं के कारण ही होती है। परन्तु इस असफलता से शिंटा लेकर वह ऐसे कार्य में अपने को लगाता है जो उसकी क्षमताओं के अनुकूल होता है और अन्ततोगत्वा वह सफलता प्राप्त करता है।

कारोबार में ईमानदारी बरतने की सलाहना के लोग भी करते हैं जो बेईमान होते हैं। वे व्यक्ति जो अपने व्यापारिक धादान-प्रदान में सचाई रखते हैं सब बोलते हैं और अपने बचन को पूरा करते हैं, उन्हें किसी धनियत का भय नहीं हो सकता।

निर्भीकता व्यक्ति में ईमानदारी के साथ ही उत्पन्न होती है। ईमानदार व्यक्ति की नजर साफ पनी होती है। वह अपने साधियों की नजर से नजर भिन्ना सकता है। उसके भाषण में स्पष्टता और बिदबसनीयता होती है। भूटा धादमी हमेशा नजर खुलकर बातें करता है। उसकी पांखें धुंधली और तिरछी होती हैं। वह दूसरों की भांखों से धांखें नहीं भिन्ना सकता। उसके भाषण को सुनकर सन्देह होता है क्योंकि वह उलझा हुआ अविश्वसनीय होता है।

धादमी अपने दायिराओं को पूरा कर भिन्ना है तो उसे फिर किसी चीज का भय नहीं रहता। उसके सभी व्यापारिक सम्बन्ध सुरक्षित रहते हैं। उसकी मीनी और कार्य समय की प्रखरता को सहन कर सकते हैं। यदि ऐसा व्यक्ति विपत्तियों में कमकर अचमस्त हो भी जाए तो भी सब लोग उनपर भरोसा करते हैं और भय के साथ अपना अण धदा होने की प्रतीला करते हैं। बेईमान लोग अपना अण बुझाने से बचना चाहते हैं और मतलब मय की माचना से पीड़ित रहते हैं। लेकिन ईमानदार लोग अणदस्त हाना नहीं चाहते। परन्तु परिस्थितिबता ऐसा हो जाने पर भी वे भयकांक्ष नहीं होते बरन् अपने प्रयत्नों को डिगुणित करते हुए अपने अण की धरायगी करते हैं।

बेईमान लोग हमेशा ही मन्मीठ रहते हैं। उन्हें अण का भय नहीं होता उन्हें मय यह होता है कि उन्हें अपने अण की धरायगी



की होती है। कम से कम उन्हें इतना सम्योप हो होता है कि उन्होंने कभी किसी व्यक्ति को भोला नहीं दिया। अपने जीवन के संस्कार बुद्धि लोगों में भी वे अपनी प्राण्डरिक पवित्रता पर सम्योप अनुभव कर सकते हैं।

धमानी लोग यह सोचते हैं कि समृद्धि प्राप्त करने के लिए बेईमानी ही सबसे सीधा मार्ग है। ऐसा इसलिए है कि वे बेईमानी पर धारण करते हैं। बेईमान धारमी नैतिकता की दृष्टि से धार पर ही होता है। जिस प्रकार एक धारमी केवल तात्कालिक धान्य को ही देखता है, उसके अंतिम पठनकीस परिणाम को नहीं देखता उसी प्रकार एक बेईमान धारमी उसके तात्कालिक लाभ को ही देखता है, उसके अंतिम परिणाम को नहीं देखता। वह नहीं समझ पाता कि इस प्रकार के धारण से उसका चरित्र मल होना है और वह अपने व्यापार का विध्वंस कर देता है। इसी प्रकार दूसरों के लाभ को अपनी जेब में रखकर मने ही हम यह सोचें कि किसी भी ही भाषाकी धार सचमता के साथ हमने दूसरों को ठग लिया है, लेकिन हम इस यथावता से धारण नहीं होते कि ऐसा करके हमने स्वयं अपने को ही छला है। बेईमानी से प्राप्त हुए पैसों को हम खुद के धारण जाना है और इस ल्याय से बचने का कोई भी मार्ग नहीं है। जिस प्रकार धारण में लोका गुणा बत्पर दुस्वार्थ-सिद्धांत के द्वारा पुष्पी पर ही झूठकर जाता है, उसी प्रकार नैतिक दुस्वार्थ-धारण भी अस्तित्वमान होता है।

जो व्यापारी हमेशा अपने सहायकों से झूठ बोलने की अपेक्षा करता है वह अपने चारों तरफ सम्येह अविश्वास और गुणा ही एकत्र करता है। नैतिक रूप से दुर्बल लोग ही उसके धारणों का पालन करते हैं, मने ही वे इस धारण कार्य से अपनी अस्तित्वमा को धारण करने में बाधित होते हैं परन्तु मन में उसके प्रति गुणा धारण रखते हैं। ऐसे विधाकृत धारण में मफनता किस प्रकार प्राप्त हो सकती है। इस प्रकार के व्यापार में विध्वंस तत्त्व धारण प्राप्त हो सकती है। इस प्रकार के व्यापार में विध्वंस तत्त्व धारण दो धारण एक न एक दिन धारण हो सकता है, लेकिन अपनी ईमान

शारी के कारण नहीं। उसकी समझता भी प्रतिष्ठित होती है और उसमें उसके चरित्र और क्वालिटी की हानि नहीं होती। निस्सन्देह किसी विद्या में सफलता प्राप्त करने की असमता उसे अपनी हीनताओं के कारण ही होती है। परन्तु हम समझता में विद्या लेकर वह ऐसे कार्य में अपने को समाता है जो उसकी समताओं के अनुकूल होता है और अन्ततोगत्वा वह सफलता प्राप्त करता है।

कारोबार में ईमानदारी बरतने की सहायता के लोग भी करते हैं जो बेईमान होते हैं। वे व्यक्ति जो अपने व्यापारिक आशान-प्रदान में सचाई रखते हैं सब बोलते हैं और अपने बचन को पूरा करते हैं, उन्हें किसी अनिष्ट का भय नहीं हो सकता।

निर्भीक्ष्णता व्यक्ति में ईमानदारी के साथ ही उत्पन्न होती है। ईमानदार व्यक्ति की नजर साफ पनी होती है। वह अपने सापिण्यों की नजर से नजर मिला सकता है। उसके भाषण में स्पष्टता और विश्वसनीयता होती है। मूढ़ आदमी हमेशा नजर बराबर बाधे करता है। उसकी धारें धँसती और तिरछी होती हैं। वह दूसरों की धारों से धारें नहीं मिला सकता। उसका भाषण का मुनबत सन्देह होता है क्योंकि वह उलझा हुआ अविद्वन्मयी हाता है।

आदमी अपने दायित्वों को पूरा कर सता है तो वह फिर किसी चीज का भय नहीं रहता। उसके सभी व्यापारिक सम्बन्ध सुरक्षित रहते हैं। उसकी शरीर और शाय ममय की प्रकृति को सहन कर सकते हैं। यदि ऐसा व्यक्ति विपत्तियों में फँसकर अल्पकाल ही भी जाए ता भी सब लोग उसपर भरोसा करते हैं और सर्व के साथ अपना अल्प अल्प होने की प्रतीक्षा करते हैं। बेईमान लोग अपना अल्प अल्प में बचना चाहते हैं और मनुष्य की भावना संपीडित रहते हैं। सचिन् ईमानदार लोग अल्पकाल ही नहीं चाहते। परन्तु परिस्थितिबल ऐसा हो जान पर भी वे अपमान नहीं होने बरन् अपने प्रयत्नों को दिगुचित करते हुए अपने अल्प की पराजयी करते हैं।

बेईमान लोग हमेशा ही मन्मीत रहते हैं। उन्हें अल्प का भय नहीं होता उन्हें भय यह होता है कि उन्हें अपने अल्प की पराजयी

## ४ | क्रम-व्यवस्था

क्रम-व्यवस्था अनुकूलिता सिद्धान्त का एक ऐसा अंग है जिसके अनुसार उद्भ्रांति को टाला जा सकता है। प्राकृतिक और सार्वभौम तत्त्व एक समुचित व्यवस्था के अनुसार अपने-अपने स्थान पर काम करते हैं जिसके कारण समस्त सृष्टि एक संज्ञ से भी अधिक सम्पूर्णता के साथ काम करती है। यदि प्राकृतिक तत्त्व अव्यवस्थित हो जाएं तो समस्त सृष्टि का विनाश हो सकता है। इसी प्रकार यदि प्रादयी का शरीरार व्यवस्थित हाता तो उसकी समुद्रि का विनाश हो जाता है।

पेचीदा से पेचीदा संयोजन केवल अनुकूलिता और पद्धति के अनुसार निर्मित होता है। कोई व्यापार व्यवसाय समाज बिना क्रम व्यवस्था के विस्तार प्रहल नहीं कर सकता। यह सिद्धान्त मुख्य रूप से सौदागर व्यापारी और संस्थाओं का संघ करने वालों के लिए अत्यन्त ही महत्वपूर्ण है।

ऐसे अनेक विषय हो सकते हैं जहाँ एक अव्यवस्थित-क्रम रखने वाले व्यक्ति भी सफल हो सकते हैं। हालांकि व्यवस्थित-क्रम व धोर ध्यान देने से उनकी सफलता और विपुलित हो सकती है लेकिन कोई व्यापार तब तक सफल नहीं हो सकता जब तक उसे एक व्यवस्थापक के हाथों में न सौंप दिया जाए।

सभी विनाश व्यापारिक संस्थाएं एक सुनिश्चित व्यवस्था के अनुसार निर्मित होती हैं। व्यवस्था के व्यापार व्यापारिक योग्यता

घोर मांगलिकता बिनाश को प्राप्त होती है। अतिम व्यापार तथा संयुक्त प्राकृतिक उपकरणों के समान ही अतिम होते हैं। इसलिये उद्योग-प्रवृत्त समस्त विवरणों की घोर ध्यान दिया जाना चाहिए। अत्यवस्थित धातवी यह सोच लेता है कि मुख्य मध्य को छोड़कर दूसरी बातों में सापरवाही बरती जा सकती है। परन्तु वह यह बात भूल जाता है कि मापन के प्रति उदासीन रहकर ध्येय की पूर्ति नहीं हो सकती। अम-विधान के अत्यवस्थित होने से संयुक्त नष्ट हो जाते हैं। विस्तृत अम-विधान के प्रति उदासीन रहने में किसी भी कार्य अथवा व्यापार-संस्था की उन्नति नहीं हो सकती।

अम-विधानों का जीवन अम-अवस्थित होता है वे समय और शक्ति का बहुत-बड़ा भाग खिन्न कर लेते हैं। जीवन की प्राप्ति के लिए एकर-उपर दौड़ना भी सापेक्ष हो सकता है अतः किष्कान्दी व्यवस्थापूर्वक काम करे और उही आधार पर संयुक्तता भी प्राप्त की जा सकती है। अत्यवस्थित जीवन ध्यान बाधित साधनों को प्राप्त करने के लिए अनेक बार बहुत लम्बे समय तक अटकने पर बाधित होते हैं। ईश्वर जीवन में बाधित वस्तुओं को पाने में अतिना बिड़ विज्ञापन अत्यवस्थित घोर अत्यवस्था हमारे मन में धाता है अतः अतः ही परिमाण में शक्ति नष्ट हो जाती है। इस शक्ति के आधार पर एक बहुत बड़ा व्यापार अथवा किया जा सकता है या किसी भी विद्या में बड़ी संयुक्तता प्राप्त की जा सकती है।

अत्यवस्थित जीवन ध्यान समय और शक्ति का संयम करते हैं। वे कोई वस्तु नहीं लेते। इसलिये उन्हें किसी भी वस्तु की खोज नहीं करनी पड़ती। उनकी प्रत्येक वस्तु अत्यवस्थित रखी होती है और वह चाहे धर्म में ही हो अत्यवस्था अम प्राप्त किया जा सकता है। ऐसे जीवन ध्यान घोर धर्म-ध्यान रह सकते हैं और अत्यवस्थित तथा दूसरों पर बोधारोपन करने में अर्थ होने वाली मानसिक शक्ति को वे किसी भी साधक-व्यक्ति नाम में अर्थ कर सकते हैं।

अत्यवस्था में एक दिन-रूपता होती है जो अत्यवस्था अनेक अत्यवस्था कर सकती है। एक अत्यवस्थित अम अपने अत्यवस्था धातवी अत्यवस्था अत्यवस्था में अत्यवस्था अत्यवस्था अत्यवस्था

किए काम कर सकता है कि देखने वाले पारदर्शक रह जाएं।  
 व्यापार-जगत के प्रत्येक विभाग में व्यवस्था इतनी ही बढ़नी  
 समयसाध्य है जितनी कि किसी वस्तु द्वारा किए गए सर्वस्व की पूर्ति  
 करना। और कभी-कभी छोटी से छोटी वस्तु के प्रति उदासीन रहने  
 से भी समस्त प्राणिक संभावनाओं के समाप्त होने की आशंका रहती  
 है। प्राणिक जगत् में व्यवस्था का नियम निरालस प्राणव्ययक है और  
 जो व्यक्ति इस नियम का सम्पूर्ण पालन करता है अपना समय और  
 धन बचाता है।

मानवीय समाज के सभी स्थायी कृतित्व एक व्यवस्था के  
 माध्यम पर टिके हुए हैं और वे इतने अपरिहार्य हैं कि यदि व्यवस्था  
 समाप्त हो जाए तो उसके साथ प्रगति भी समाप्त हो जाएगी।  
 उदाहरण के लिए साहित्य की महान उपसंस्थियों पर विचार  
 कीजिए। समासिक साहित्यकारों और महान प्रतिभाओं महान  
 कालों पर्यन्त सद्य-कृतियों विद्यालय इतिहास-ग्रन्थों भारतमा को  
 प्रायोचित करने वाली वस्तुताओं को लीजिए और इसके साथ ही  
 मानव-समाज के सामाजिक आदान प्रदान उसके धर्मों उसके विधि  
 विधानों और पुस्तकीय ज्ञान के विद्यालय को लीजिए। इन  
 पारदर्शक साधनों और धाया की सफलताओं पर ध्यान देने से  
 धायाको प्रकट होता कि वे शीघ्र अपनी रचना और परिष्कृति के लिए  
 केवल केवल धाया के व्यवस्थित विद्यालय की ही श्रेणी हैं (यह  
 वस्तु केवल धाया के व्यवस्थित विद्यालय के परिपालन से ही  
 की पृष्ठभूमि में केवल कुछ मुनिरचित नियमों के परिपालन से ही  
 इतने विद्यालय और धाया परिमाणों को प्राप्त किया जा सकता है।  
 इसी प्रकार केवल इस प्रकार के व्यवस्थित कम विद्यालय के द्वारा  
 ही कथित-सम्बन्धी प्राणव्ययक सफलताएं प्राप्त की जा सकती हैं और  
 इसी प्रकार केवल बोड़े-ये प्राणिक नियमों का पालन करने से ही  
 एहसासों पुर्ण वाली मशीनों का निर्माण किया जाता सम्भव हो सका  
 है।

इस तरह हम देखते हैं कि उलझी हुई चीजों में व्यवस्था-क्रम  
 प्राणिक प्रकार सरलता उत्पन्न की जा सकती है कि प्रकाशकाल के

कठिन चीज को सरल किया जा सकता है और जिस प्रकार व्यवस्था के केन्द्रीय सिद्धान्त न सर्वस्य विधिलताएँ रखने वाली चीजों में समन्वय स्थापित किया है और जिस प्रकार पूर्व अनुक्रम के अनुसार उनकी योजना बिना किसी भी भाँति क की जा सकती है।

व्यवस्था सिद्धान्त का पालन करके ही ब्रह्मनिष्क भोग पुरेबीन से लेते जा सकने वाले सुदृढ़ स सुदृढ़ यन्त्रों तथा पुरेबीन से ही लेने जा सकने वाले विज्ञान यन्त्रों का निर्माण और संस्थापन करने में सफल हुए हैं। इनके महाने भावों पदार्थों में केवल एक पदार्थ पर कुछ ही यन्त्रों में स्थित किया जा सकता है। विज्ञान तथा व्यापार के प्रत्येक विभाग की इसी धमता के आधार पर तेजी के साथ जानकारी प्राप्त की जा सकती है और बहुत बड़े परिमाण में समय और धन को बचाया जा सकता है। हम बहुधा बार्मिक राजनीतिक और व्यापारिक व्यवस्थाओं की बात करते हैं और विचार-रुम विज्ञान यात्रा सरकार तथा इसी प्रकार की दूसरी चीजों की व्यवस्था पर विचार करते हैं और अन्त में इसी निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि मल्लकीय न्याय की व्यवस्था के मूल आधार पर ही एकसाथ संयोजित किया जा सकता है।

वास्तव में भ्रमण के महान भौतिक सिद्धान्तों में व्यवस्था का महत्वपूर्ण स्थान है। इसके आधार पर हम इन विज्ञान समझता को एक मूल में बाँध सकते हैं। विरह के विज्ञान जनसमुदाय में जिनमें प्रत्येक व्यक्ति योजना स्थान बनाने के लिए संघर्षशील है और एक दूसरे के अहंसाओं की पूर्ति करने और स्वार्थसिद्धियों के लिए मल्लकीय है केवल कम-व्यवस्था के सहारे ही शान्तिपूर्वक सह-मनोव्यवस्था सम्भव है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि व्यवस्था महाना से विनयी धुड़ी हुई है। प्रत्येक व्यक्ति की मति भिन्न होती है। व्यवस्था और अनुमान का प्रतिक्षण भी सभी लोगों को प्राप्त नहीं होता। मनिन कुछ बोड़े भोग हैं जो इन सत्य को अनुभव करते हैं कि चाहे व्यापार ही चाहे कानून बर्मे विज्ञान या राजनीति कोई भी क्षेत्र हो बिना सुनिश्चित नियमों का पालन किए विज्ञान जनसमुदाय को पदास्थान नहीं.

3  
 से और उपनिषेध का उपनिषेध से व्यवस्थापूरक सचयं स्थापित करने और बर्तीकरण करने से ही सभी चीजों में—व्यापार-संस्थाओं की सम्पूर्णता और बिघासता में अभिवृद्धि साईं जा सकती है। जो व्यक्ति निरन्तर अपनी कार्यपद्धति का विकास करता रहता है, अपनी निरन्तर-व्यक्ति को सुनियोजित करता है वह परिणामस्वरूप अधिक लाभनसम्पन्न होता जाता है। ऐसा करने से वह अपनी कार्यपद्धति में सुधार करने के नये-नये तरीकों की ईजाद भी करता है। ऐसे व्यक्ति चाहे वारिष्क धनवा वारिष्क व्यापारिक धनवा प्राध्यात्मिक किन्ती भी लाभ में ही भरती के पटाऊमी पुत्रों में गिने जाते हैं और मानवता के सरलाक और उन्मायक माने जाते हैं। व्यवस्थापूरक निर्माण करने वाला व्यक्ति सृष्टि करता है और उसका संवर्धन करता है जबकि धर्मवस्तित व्यक्ति विघटन और विनाश करता है। परन्तु यदि व्यवस्था और अनुदानन रखा जाए तो किसी भी व्यक्ति की क्षितियों के विकास चरित की सम्पूर्णता और उसके संयोजन के प्रभाव धनवा व्यापार के क्षेत्र की सीमाएं निर्धारित नहीं की जा सकती। ऐसा व्यक्ति प्रत्येक वस्तु को महास्थान रसता है। प्रत्येक विनाय का वारिष्क एक विशेष व्यक्ति को सीपता है और इतनी योग्यता और सम्पूर्णता के साथ प्रत्येक कार्य से सम्बन्धित प्रत्येक विवरण की धीम से धीम परीक्षा कर सकता है और बाध-यद्धतास कर सकता है।

व्यवस्था के निर्माण के लिए निम्नलिखित चार तत्त्व आवश्यक हैं

- 1 उत्तरता
- 2 सुद्धता

- 3 उपयोजिता
- 4 बिघासता

उत्तरता ही हमारे जीवन्त होने की परिचायक है। नामरूपता की माधना से ही हम प्रत्येक परिस्थिति पर तात्कालिक रूप से अधिकार प्राप्त कर सकते हैं। व्यवस्थाप्रियता से ही वह क्षमता उत्पन्न और विकसित होती है। सफल सेनानायक नहीं होता है जो अपने शत्रु की सजाय योजनाओं का सामना करने की क्षिति से

सम्पन्न हो। इसी प्रकार प्रत्येक व्यापारी में अपने व्यापार पर प्रभाव डालने वाली अदृष्ट गतिविधियों का सामना करने की उत्तरदाता होनी चाहिए और किसी भी बिज़ारवान व्यक्ति में यह सामर्थ्य होनी चाहिए कि वह किसी भी समस्या का समाधान ढूँढ सके। जिन व्यक्तियों के हाथ हड़बड़ और अस्थिर मस्तिष्क मरबड़ सतक और उत्तर होते हैं और जिन्हें यह मामूली हाता है कि वे क्या कर रहे हैं और उस कार्य को वे व्यवस्थापक और दसठापूबक करते हैं। यनायास उनकी पति नीच स तीव्रतर होती जाती है उन्हें समुद्र के बारे में उठिन्न होने की आवश्यकता नहीं रहती। वे चाहें या न चाहें समुद्र उन्हें प्राप्त होनी ही है। वह उनका दरवाजा खटखटाती है और अपने व्यवस्थापक गुण स वे उनका वास्तविक अधिकारी बनते हैं।

समृद्धता और स्पष्टता का समस्त व्यापारिक उद्योग वर्गों में अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। वह समृद्धता और स्पष्टता व्यवस्था-राम के सहारे ही सम्भव हो सकती है। जो व्यापारी अपने कारोबार में व्यवस्था कायम नहीं रख पाता अस्तित्वरत्न उसका व्यापार नष्ट हो जाता है।

समुद्र और अस्पष्टता ऐसे दोष हैं जहाँ सबसधारण जिनके टिकार पाए जाते हैं। समुद्रता एक बात की छोटक है कि कार्यकर्ता में उचित मात्रा में आत्मानुशासन का अभाव है। केवल उच्चस्तरीय नैतिक संस्कृति ही आत्मानुशासन के रूप में प्रकट होती है। बहुधा लोगों में यह गुण नहीं पाया जाता। समुद्रि कम बाला व्यक्ति अपने मानिक अथवा निर्देहक के आदेशों का पालन नहीं करता क्योंकि वह यह समझने में है कि जो कुछ वह कह रहा है वही अर्थ है। ऐसी मनोवृत्ति यात्रा अनुप्य अथवा असमयताओं पर कभी भी विचार प्रान्त नहीं कर सकता। उसकी बुद्धि अन्धी हो जाती है और वह अनरोधार्य हीन स्थिति को प्राप्त होता जाता है। व्यक्ति चाहे व्यापारी हो उद्योगपति हो अथवा ज्ञान और बिचार के अभाव में काम करने वाला हो वह स्थिति सभी अगह समान रूप से घटित होती है।

समुद्रि का दुर्बल (युक्ति इस दुर्बल क परिचय विम्बसात्क होते हैं अर्थात् नम बुराई ही विना जाना चाहिए, हालाँकि



से और उपनिवेश का उपनिवेश से व्यवस्थापूर्वक संघर्ष स्थापित करने और बर्फीकरण करने से ही सभी चीजों में—व्यापार-उत्सार्धों की सम्पूर्णता और विद्यासता में प्रविष्टि आई जा सकती है। जो व्यक्ति निरन्तर अपनी कार्यप्रवृत्ति का विकास करता रहता है अपनी निर्माणा-शक्ति को सुनियोजित करता है वह परिणामस्वरूप अधिक लाभसम्पन्न होगा जाता है। ऐसा करने से वह अपनी कार्यप्रवृत्ति में सुधार करने के नये-नये तरीकों की खोज भी करता है। ऐसे व्यक्तिवाले सामिक व्यवसायार्थिक व्यापारिक व्यवसाय आध्यात्मिक किसी भी क्षेत्र में हों बरती के पराजनी पुत्रों में जिने जाते हैं और मानवता के सरलक और उन्मायक माने जाते हैं। व्यवस्थापूर्वक निर्माण करने वाला व्यक्ति सृष्टि करता है और उसका संवर्धन करता है जबकि अव्यवस्थित व्यक्ति बिगड़न और विनाश करता है। परन्तु यदि व्यवस्था और अनुशासन रखा जाए तो किसी भी व्यक्ति की शक्तियों के विकास बरित की सम्पूर्णता और उसके संवर्धन के प्रभाव व्यवसाय व्यापार के क्षेत्र की सीमाएं निर्धारित नहीं की जा सकती। ऐसा व्यक्ति प्रत्येक वस्तु को बचावस्थान रखता है। प्रत्येक विभाग का शक्ति एक निर्येप व्यक्ति को सौंपता है और अपनी योग्यता और सम्पूर्णता के साथ प्रत्येक कार्य का बर्फीकरण करता है कि आवश्यकता पड़ने पर अपने कार्य से सम्बन्धित प्रत्येक विवरण की खोज से कीमती परीक्षा कर सकता है और जांच-पड़ताल कर सकता है।

व्यवस्था के निर्माण के लिए निम्नलिखित चार तत्व आवश्यक हैं

१. उत्पन्नता

२. बुद्धता

३. उपयोजिता

४. विश्वरता

उत्पन्नता ही हमारे जीवन होने की परिचायक है। वायस्कता की भावना से ही हम प्रत्येक परिस्थिति पर तत्कालिक रूप से अधिकार प्राप्त कर सकते हैं। व्यवस्थाप्रियता से ही यह जगत् जलान और विकसित होती है। सफल उद्योगाचार्य से ही यह जगत् अपने धनु को बराल योग्यार्धों का सामना करने की शक्ति से

हम्यन्त हो। इसी प्रकार प्रत्येक व्यापारी में अपने व्यापार पर प्रभाव डालने वाली महत्त्व मतिविविधों का सामना करने की उत्तरदाता होनी चाहिए और किसी भी विचारपाल व्यक्ति में यह सामर्थ्य होनी चाहिए कि वह किसी भी समस्या का समाधान खोज सके। बिना व्यक्तिओं के हृदय, हृदय और मस्तिष्क सहज सतक और उत्तर होते हैं और जिन्हें यह मान्य होता है कि वे क्या कर रहे हैं और उक्त कार्य को वे व्यवस्थापूर्वक और दक्षतापूर्वक करते हैं। धनमात्र उनकी पति मीड से तीव्रतर होती जाती है, उन्हें समृद्धि के बारे में उद्दिष्ट होने की आवश्यकता नहीं रहती। वे चाहें या न चाहें समृद्धि उन्हें प्राप्त होती ही है। वह उनका बरबाद बटवाराही है और अपने व्यवसायिक गुण से वे उनके वास्तविक अधिकारी बनत हैं।

शुद्धता और स्पष्टता का समस्त व्यापारिक उद्योग-वर्गों में वास्तव्य महत्त्वपूर्ण स्थान है। वह शुद्धता और स्पष्टता व्यवस्था-क्रम के माहुरे ही उत्पन्न हो सकती है। जो व्यापारी अपने कारोबार में व्यवस्था कायम नहीं रख पाता अन्ततया उसका व्यापार नष्ट हो जाता है।

समृद्धि और अस्पष्टता ऐसे दोष हैं जहाँ सर्वसाधारण जिनके विचार पाए जाते हैं। अस्पष्टता हम बात की चोकरक है कि कार्यकर्ता में उचित मात्रा में आत्मन्यासन का अभाव है। केवल उच्चस्तरीय नैतिक संस्कार ही आत्मन्यासन के कर में प्रकट होती है। बहुधा लोगों में यह गुण नहीं पाया जाता। समृद्धि करने वाला व्यक्ति अपने मारिक अथवा निरंतरक के धारणों का पाठन नहीं करता क्योंकि वह यह अकम्भेता है कि जो कुछ वह कर रहा है वही स्रेष्ठ है। ऐसी मनोवृत्ति वाला मनुष्य अपनी अज्ञानताओं पर कभी भी विचार प्राप्त नहीं कर सकता। उसकी बुद्धि धन्वी हो जाती है और वह अनपेक्षित होने स्थिति को प्राप्त होता जाता है। व्यक्ति चाहे व्यापारी हो उद्योगपति हो पदवात्राल और विचार के क्षेत्र में काम करने वाला हो वह निर्दिष्ट नहीं जयह अमान रूप से बर्धित होती है।

समृद्धि का दुश्मन (यूफि इय बुर्बुप के परिचाम विध्वंसालक होते हैं) अन्विष्ट ऐसे बुराई ही बिना जाता चाहिए, इत्नाकि यह